तृतीय अध्याय

'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' उपन्यासों के कथानकों का मूल्यांकन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन

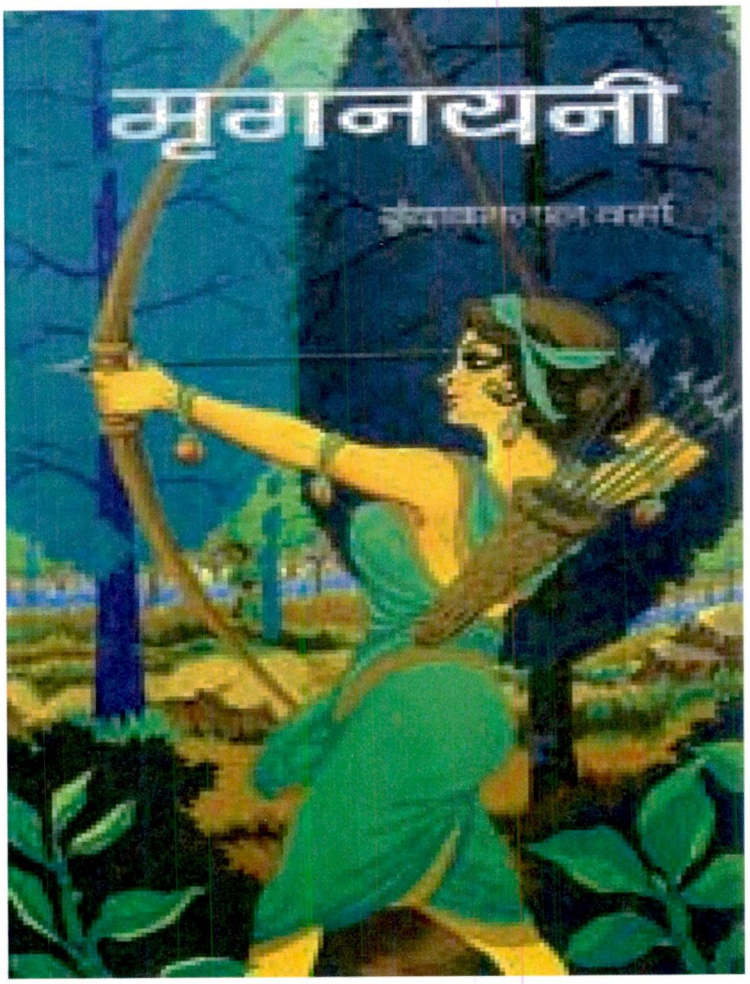

निन्नी – 'मृगनयनी'

तृतीय अध्याय : 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' उपन्यासों के कथानकों का मूल्यांकन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन

'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' वर्माजी का सबसे प्रसिद्ध एवं चौथा ऐतिहासिक उपन्यास है जिसकी रचना सन् 1946 में हुई। प्रस्तुत उपन्यास की मुख्य कथा बालिका मनू के झाँसी की रानी बनने, विधवा होने के बाद सन् 1857 में राज्य संभालने तथा अंत में अँग्रेज़ों से लड़ते प्राणोत्सर्ग करने की है।

1. 'झाँसी की रानी की लक्ष्मीबाई' की संक्षिप्त कथावस्तु

मनुबाई, बिठूर निवासी और बाजीराव द्वितीय के आश्रित मोरोपन्त की बेटी है। वह बाजीराव के दोनों लड़के नाना साहब और राव साहब के साथ खेला करती थी। बचपन में ही बालिका मनू के हृदय में भारतीय वीरांगनाओं का अचल संस्कार जम गया। उसकी रुचि अस्त्र–शस्त्र संचालन, अश्वारोहण एवं अन्य वीरोचित कार्यों में लगा रहता था। वह पढ़ती थी और शास्त्रों का अध्ययन करती थी। स्वभाव से वह बड़ी चपल और देखने में सुंदर थी।

मनू की शादी झाँसी के विधुर प्रौढ़ राजा गंगाधरराव के साथ हुई। विवाह के बाद मनू का नाम लक्ष्मीबाई रखा गया। लक्ष्मीबाई गंगाधरराव के अतिरसिक, आलसी, सहजकोपी स्वभाव को पसंद नहीं करती थी। वह महलों के बंधन में रहकर ही व्यायाम, घुड़सवारी का नित्य अभ्यास करती रहती थी। अपनी दासियों, काशी, सुंदर, मुंदर आदि को सहेली के रूप में ग्रहण कर प्रोत्साहन देकर उन्हें योद्धा बनाती थी। रानी को एक पुत्र हुआ। किन्तु तीन महीने के बाद मर गया। इस आघात से राजा गंगाधरराव बीमार हो गए। अपना अंतिम समय जानकर दामोदरराव नामक बालक को गोद लिया। कुछ समय बाद राजा का देहांत हो गया। उस समय लक्ष्मीबाई की अवस्था अठारह वर्ष की थी।

पति के मरने के बाद वह अपने ऊपर से अँग्रेज़ी शासन का कलंक मिटा देने के लिए तात्या और नाना साहब से समय–समय पर देश को स्वतंत्र कराने की योजना पर विचार करती रहती थी।

नवाब अली बहादुर की जागीर जो उसके पिता रघुनाथ राव के काल में अँग्रेज़ों के द्वारा जब्त कर ली गयी थी और पाँच सौ रुपये मासिक पेन्शन पा रहा था गंगाधर राव के शासनकाल में यथासंभव वापस पाना चाहता था। मगर अपनी मृत्यु तक राजा ने पॉलीटिकल एजेंट से बात करने की बात कहकर नवाब को टाल दिया था। उनके इस कार्य से प्रताड़ित होकर वह अँग्रेज़ पदाधिकारियों से मिलकर रानी के आंतरिक रहस्यों का भेद खोलने लगा। रानी झाँसी की महिलाओं को एकत्र कर युद्ध संबंधी अनेक शिक्षाएँ देने लगी। उसी समय सिपाही विद्रोह होने से झाँसी से अँग्रेज़ों का सफाया हो गया। किन्तु अवसर पाकर उस समय का सर्वश्रेष्ठ जनरल रोज ने रानी के दत्तक पुत्र को अस्वीकार कर झाँसी राज्य पर कब्जा कर लेने का आदेश दे दिया।

रानी ने कहा कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। मगर राज्य पर अँग्रेज़ों ने कब्जा कर लिया और रानी दूरदर्शिता से उस समय चुप रह गई। जनता अँग्रेज़ों के इस कमीनेपन से भड़क उठी। परंतु रानी के खामोश रह जाने से झाँसी में किसी प्रकार का उपद्रव नहीं हुआ। रानी जानती थी कि अँग्रेज़ बहुत धूर्त हैं इसलिए उसने उनका सामना चाणक्य–नीति से करने का निश्चय किया।

झाँसी पर अँग्रेज़ों का कब्जा हो गया। नवाब अली बहादुर के नौकर पीरअली ने षडयंत्र से अपने को झाँसी की रानी का जासूस घोषित किया तथा सब पर विश्वास जमा दिया। बहुत दिनों तक अँग्रेज़ों से युद्ध चलता रहा। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई अपने पुरुष और महिला सेना दल की सहायता से बड़ी बहादुरी

से अँग्रेज़ों की सेनाओं को भस्म कर उनके दाँत खट्टे करती रही, किंतु पीर अली के द्वारा किले का सारा भेद पा जाने के कारण तथा दुलहासिंह नामक झाँसी के एक तोपची के द्वारा ठीक समय पर विश्वासघात करने के कारण अँग्रेज़ों ने झाँसी के किले को विनष्ट कर डाला। रानी दामोदरराव को अपने पीठ पर बाँधकर कुछ चुने हुए सरदारों के साथ बहादुरी से लड़ती हुई झाँसी से बाहर निकल गयी और कालपी पहुँच गई।

कालपी में राव साहब, तात्या टोपे आदि ने रानी का जी खोलकर आदर–सत्कार किया। रानी ने देखा कि कालपी की सेना अव्यवस्थित थी। यह देखकर रानी बहुत दुःखी हुई। इसी समय रोज ने कालपी पर चढ़ाई की। राव साहब की सेना में लुटेरे थे। उन्हें स्वराज्य की चिंता ही रहती थी। फलस्वरूप अँग्रेज़ों से हुई मुठमेड़ में यह सेना बुरी तरह हार गई। ये लोग भागकर ग्वालियर पहुँचे। वहाँ रानी की प्रेरणा से ग्वालियर पर चढ़ाई करके वहाँ का किला स्वायत्त कर लिया गया। वहाँ की सेना और जनता को मिला लिया गया। ग्वालियर का किला हाथ आते ही फिर नाच–रंग शुरू हो गया। रानी की एक न बनी। फिर रोज ने ग्वालियर पर चढ़ाई कर दी। विलासी पेशवाओं को अब रानी की याद आई। रानी ने कुशलता से सैन्य संचालन किया। किंतु ग्वालियर की सेना विपक्ष में हो गई। अतः इन लोगों की हार हुई।

रानी फिर लड़ते–लड़ते आगे बढ़ने लगी। रानी तेजी से नाले के किनारे पर आ गई परंतु उनका घोड़ा अड़ गया और नाले को पार न कर सका। इसी बीच एक अँग्रेज़ की पिस्तौल ने रानी की बाई जाँघ में चोट कर दी। उसी समय एक गोरे सवार ने रानी के सिर पर तलवार से वार किया। इस प्रकार रानी का प्राणान्त हुआ। मरते समय उन्होंने अपने सरदार को आदेश दिया कि अँग्रेज़ मेरी लाश न छूने पायें। स्वराज्य की नींव पर पत्थर बनकर रानी अमर हो गई।

1.1. कथानक के वर्गीकरण के सिद्धांतों की सामान्य जानकारी :

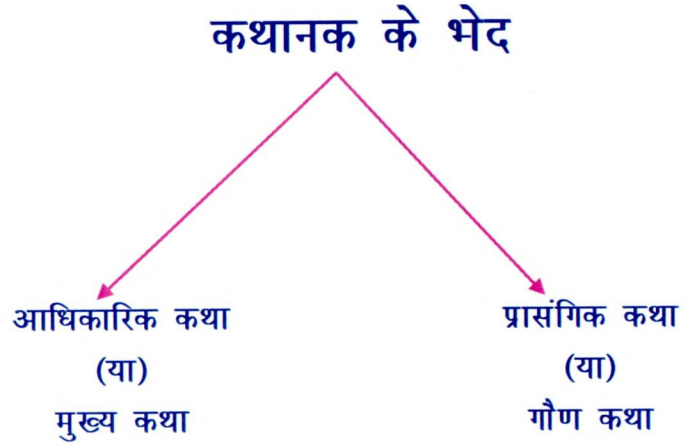

कथानक के दो भेद होते हैं – आधिकारिक और प्रासंगिक। आधिकारिक कथा (Main Plot) वह कथा होती है जो कथा के नायक–नायिका को केन्द्र बनाकर चलती है अथवा इसे यों भी कहा जा सकता है कि आधिकारिक कथा नायक–नायिका के जीवन विकास से ही संबंधित होती है। प्रासंगिक कथा उन कथाओं को कहते हैं जो आधिकारिक कथानक की सहायता अर्थात् आधिकारिक कथानक को आगे बढ़ाने के लिए जन्म लेती है और आधिकारिक कथानक में ही पर्यवसित हो जाती है। यह आवश्यक नहीं कि प्रासंगिक कथा आधिकारिक कथा से ही जन्म लें और उसमें ही उसका अंत हो जाय। ऐसा भी हो सकता है कि आधिकारिक और प्रासंगिक कथाएँ समानान्तर चलें। ऐसी स्थिति में आधिकारिक कथा अपनी महानता के कारण चलती रहती है और प्रासंगिक कथाएँ किसी दूसरे छोर से निकलकर आधिकारिक कथा को धक्का दे–देकर बढ़ाती और खुद बढ़ती रहती है। इस संबंध में एक बात अच्छी तरह स्मरण रखनी चाहिए कि प्रासंगिक कथा आधिकारिक कथा से स्वतंत्र नहीं हो सकती। प्रासंगिक कथा का उद्देश्य प्रत्येक स्थिति में आधिकारिक कथा को आगे बढ़ाना है। वह अपना उद्देश्य आप ही नहीं बन सकती। यदि वह यह कार्य नहीं करती अर्थात् आधिकारिक कथा से स्वतंत्र

होकर चलती रहती है तो वह उपन्यास की रचना को पूर्णतः असफल बना देगी। उपन्यास का सामूहिक प्रभाव (Effective Totality) सर्वथा छिन्न–भिन्न हो जाएगा।

1.2. प्रासंगिक कथाओं का वर्गीकरण :

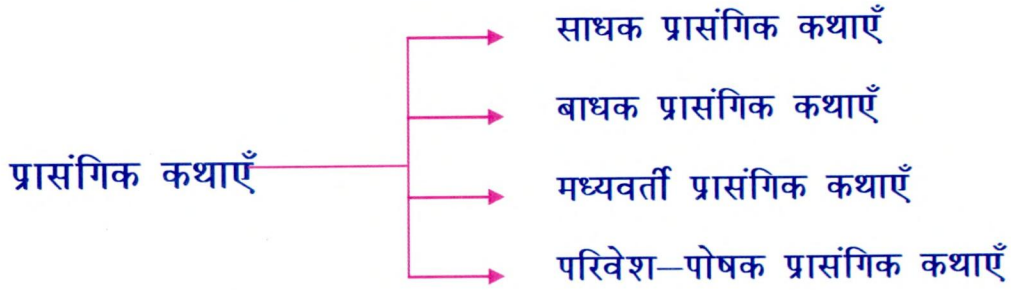

साधक प्रासंगिक कथाएँ : आधिकारिक कथा की साधक बनकर उनको आगे बढ़ाने वाली कथाएँ।

बाधक प्रासंगिक कथाएँ : आधिकारिक कथानक के चरित्रों की विरोधी बनकर उनका विकास करनेवाली कथाएँ।

मध्यवर्ती प्रासंगिक कथाएँ : आधिकारिक कथा के विकास में बहुत थोड़ा योग देनेवाली और उपन्यास के भीतर किसी अन्य प्रयोजन को सिद्ध करती प्रतीत होने वाली।

परिवेश–पोषक प्रासंगिक कथाएँ : केवल परिवेश का पोषण करने वालीं और उनकी स्थापना में योग देनेवाली कथाएँ।

2. 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' के कथानक की ऐतिहासिकता एवं वर्गीकरण :

उपन्यास की बहुत सी घटनाओं का आधार पारसनाथ की 'रानी लक्ष्मीबाई का जीवन चरित' है।★ *(वर्मा और स्कॉट के ऐतिहासिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. रामकुमार शर्मा, निर्माण प्रकाशन, पृ. 80)* परंतु वर्माजी को यह मान्य न हुआ कि रानी विवश होकर लड़ी थी। उन्होंने अपनी खोज द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि रानी स्वराज्य के लिए लड़ी थी। वर्माजी ने इस उपन्यास को चार भागों

में बाँटा है। पहले भाग में गंगाधरराव के पूर्वजों का इतिहास, उनकी रुचि और प्रकृति का चित्रण है। दूसरे भाग में रानी का बचपन, विवाह, झाँसी आगमन, पुत्रोत्पत्ति और मृत्यु, दामोदरराव को गोद लेना, राजा की मृत्यु, अँग्रेज़ द्वारा दत्तक पुत्र का सिद्धान्त अस्वीकार, गद्दी के एक दावेदार पीरअली का अँग्रेज़ों से मिलना, झाँसी को कोर्ट किया जाना, रानी से किले का छिन जाना, रानी की प्रतिक्रिया और प्रतिशोध की भावना आदि का वर्णन है। तीसरे भाग में अँग्रेज़ों की नीति से छावनियों में आक्रोश, रानी का सैन्य–संगठन, सिपाही विद्रोह, झाँसी पर रानी द्वारा पुनः अधिकार, जनरल रोज का झाँसी पर आक्रमण आदि घटनाओं का वर्णन है। चौथे भाग में रानी का अँग्रेज़ों के विरुद्ध युद्ध करते हुए वीर गति पाने का वर्णन है। ये सभी घटनाएँ ऐतिहासिक हैं। ''रानी की वीरता आदि विशेषताओं को देखकर पश्चिम के सभी इतिहास लेखक उसको विद्रोहियों का सबसे अच्छा और 'वीर नेता' स्वीकार करते हैं।''★ *(दि केम्ब्रिज हिस्टरी ऑफ ब्रिटिश एम्पायर भाग–5, एच.एच. होडवैल, पृ. 203)*

इस उपन्यास में कुछ लोक प्रसिद्ध घटनाओं को भी स्थान मिला है। झलकारी का रानी होने का स्वांग भरना, उसका पकड़ा जाना, उसे पागल समझकर एक सप्ताह बाद छोड़ दिया जाना, नवाब साहब, मदनपुर और बानपुर के राजा की जिद पर तात्या टोपे द्वारा जूही को नाचने के लिए मनाने जाना, परंतु उसके द्वारा अस्वीकार किया जाना, तात्या टोपे का जूही को जन्म–संगिनी बनाने का प्रस्ताव आदि सभी घटनाएँ परम्परा पर आधृत हैं। नारायण शास्त्री तथा छोटी भंगिन की कहानी भी जनश्रुति ही है। छोटी का असली नाम मछरिया था।''★★ *(झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, पृ. 342)*

काल्पनिक घटनाओं की सहायता इस उपन्यास में भी ली गई है। मुन्दर–रघुनाथसिंह तथा मोतीबाई–खुदाबख्श का प्रेम प्रसंग मुख्य काल्पनिक

घटनाएँ हैं। मोतीबाई–खुदाबख्श की प्रेम कहानी का आधार उन दोनों की कब्रें हैं जो झाँसी के किले में हैं। वर्माजी द्वारा डॉ. सिंहल को लिखे एक पत्र में उपर्युक्त प्रेम–प्रसंग को काल्पनिक स्वीकार किया है। ''लक्ष्मीबाई' में जूही–तात्या टोपे की प्रेम कहानी वास्तविक घटना है, मुन्दर–रघुनाथ सिंह और मोतीबाई–खुदाब्खश की प्रेम वाली बात मेरी कल्पना है। जूही–तात्या टोपे के प्रेम कहानी उतनी ही है जितनी मैंने बतलाई है। शारीरिक सम्पर्क उन दोनों का कभी नहीं हुआ।''★
(उपन्यासकार वृंदावनलाल वर्मा, डॉ. शशिभूषण सिंहल, दिनमान प्रकाशन, पृ. 311)

सम्पूर्ण कथानक इतिहास–सम्मत है। दादी की कहानी की धरोहर के अतिरिक्त, जिनके कारण लेखक को लक्ष्मीबाई के वीर कार्य के प्रति संस्कारगत श्रद्धा उत्पन्न हो गई थी, जजी–कचहरी की चिट्ठियाँ, नवाब बन्ने (अर्जीनवीस) से प्राप्त नवाब अलीबहादुर का रोजनामचा, मुं. तुरुबअली दरोगा के बयान, अजीमुल्ला के प्रमाण, राजा साहब कटेरा से प्राप्त दस्तावेज, मराठा विष्णुराव गोडसे, लक्ष्बीबाई के भतीजे से मुलाकात करने पर प्राप्त जानकारी, कलक्टरी से मिली तत्कालीन सामग्री, विभिन्न अँग्रेज़ों और रानी के पत्र आदि ने लेखक के उपन्यास को एकदम इतिहास का बाना पहनाने में सहायता दी है। यत्र–तत्र इसी कारण से अनेक घटनाओं की तिथियाँ भरी पड़ी हैं। झाँसी, ग्वालियर के युद्ध–जैसे प्रमुख घटनाओं के अतिरिक्त मेहतर का ब्राह्मण सिपाही से पानी पीने के लिए लोटा माँगना, मोतीबाई की नाटकशाला में नाटकों का होना जैसी, छोटी–छोटी घटनाएँ, गंगाधरराव, नाना, तात्या टोपे, दुल्हाजू जैसे पात्रों के अतिरिक्त महलखाँ, मोतीबाई, जुही, सुंदर–मुंदर और काशी, मालकम, रोज, गार्डन–इन सभी पात्रों का होना, उनके द्वारा किये गये कार्य, कही गई बातें या लिखे गए पत्र–सभी कुछ ऐतिहासिक हैं। यहाँ तक कि समूचा उपन्यास, किसी इतिहासकार द्वारा लिखा गया, झाँसी और 1857 की सैनिक क्रांति का इतिहास–सा लगने लगता है।

किन्तु 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' मात्र इतिहास नहीं, उपन्यास भी है। इतिहासकार और उपन्यासकार में एक बड़ा भेद होता है जिससे इतिहासकार मात्र इतिहासकार रह जाता है और ऐतिहासिक उपन्यासकार उससे कहीं ऊपर उठकर सही अर्थों पर उस युग का इतिहास लिखता है। इतिहासकार यथार्थ–का वर्णन करता है, उसे कार्यात्मक सत्य के अन्वेषण से कोई संबंध नहीं, उसे उस युग की आत्मा के सत्यों, उसके वास्तविक रूपों, अंतर्हित सूक्ष्म, व्यक्त–अव्यक्त, सौन्दर्य–असौन्दर्य से कोई मतलब नहीं। ऐतिहासिक उपन्यासकार स्वप्नद्रष्टा की भाँति उस युग में साँस लेता हुआ अपने कल्पना तत्वों से पुरातन युग के स्वप्नों को साकार करता है। इसलिए इतिहास सही होते हुए भी नीरस बना रहता है और ऐतिहासिक उपन्यास मानवीय सत्य की सरस उपलब्धियों का भंडार लेकर हमारे लिए सदैव दिलचस्पी का आधार बन जाता है। इन अर्थों में 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' को वर्माजी का उत्कृष्ट ऐतिहासिक उपन्यास कहा जाएगा जिसमें ऐतिहासिक तथ्यों और कल्पनागत सृष्टि का अद्‌भुत समन्वय है।

संक्षेप में कथावस्तु पूर्णतः ऐतिहासिक है। घटनाएँ एवं स्थान सभी कुछ ऐतिहासिक हैं। इस ऐतिहासिक कथानक के निर्वाह में भी लेखक ने पर्याप्त सफलता पाई है और जहाँ भी कल्पना के डोरों के बिखरे कथा सूत्र को जोड़ा है वहाँ भी ऐतिहासिक अक्षय है।

3. 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' का आधिकारिक कथानक एवं प्रासंगिक कथाएँ :

वर्माजी के ऐतिहासिक उपन्यास सरल कथावस्तु वाले भी हैं और जटिल कथावस्तु वाले भी। 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' उनका जटिल कथावस्तु वाला उपन्यास है। इसमें मुख्य कथा के साथ अनेक प्रासंगिक कथाओं का सामंजस्य स्थापित किया गया है। ये प्रासंगिक कथाएँ सहायक कथावस्तु, प्रतिवस्तु, पताका

तथा प्रकरी के रूप में उपन्यास के कथानक को गति प्रदान करती चलती हैं। इसके अतिरिक्त इस प्रासंगिक कथावस्तुओं के द्वारा रोचकता और प्रभावोत्पादकता की भी सृष्टि की गई है।

मुख्य कथानक लक्ष्मीबाई को घेर कर चलता है। आधिकारिक कथानक इस प्रकार गठित किया गया है कि वह प्रासंगिक कथाओं से भली प्रकार अनुस्यूत हो गया है। प्रारंभ में रानी की बाल क्रीडाओं का वर्णन करता हुआ उपन्यासकार शीघ्र ही अपने महत उद्देश्य की ओर अग्रसर हो जाता है और उसका यह उद्देश्य है – बिठूर में पली मोरोपंत ब्राह्मण की कन्या मनू को झाँसी के सिंहासन पर आसीन कराना। 10–11 साल की मनू झाँसी के अधेड़ राजा गंगाधरराव से ब्याह दी जाती है। कुशाग्र बुद्धि–मनू झाँसी आकर तत्कालीन परिस्थितियों और वातावरण के बिल्कुल अनुरूप बन जाती है। राजा गंगाधरराव के प्रति जनता में जो विरोध था वह रानी को पाकर समाप्त हो जाता है। पश्चात् उपन्यासकार भारत के उस स्वाधीनता संग्राम की ओर आता है जिसने एक बार सैकडों वर्षों से जमे हुए ब्रिटिश शासन की जड़ों को हिला दिया था। कथावस्तु का आकर्षण कहीं भी कम नहीं होने पाता।

कथावस्तु का अंत कारुणिक है। पर करुणा के होते हुए भी वह जीवन में अपूर्व क्रियात्मकता का संचार करता है। रानी का अन्त भारत के सम्पूर्ण स्वाधीनता संग्राम का अन्त था। उन्होंने अँग्रेज़ों को यह बता दिया था कि भारत की नारी केवल श्रृंगार और वासना की पुतली नहीं है उसके हृदय में सैकड़ों ज्वालामुखियों का विस्फोट निहित है एवं बड़े–बड़े साम्राज्यों तक को धूल में मिला सकती है। रानी की मृत्यु भारत के स्वाधीनता संग्राम को लगने वाला एक कड़ा आघात था। उनको आहतावस्था में देख गुलमुहम्मद जैसा कट्टर पठान भी आँखों से आँसू बरसाकर अपने खुदा को पुकार उठा था – "खुदा! पाक परवर दिगार!

रहम, रहम! उस कट्टर सिपाही की आँखें आँसुओं को मानों बरसाने लगीं और वह बच्चों की तरह हिलक–हिलककर रोने लगा।''★ *(झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, पृ. 333)*

3.1. 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' की प्रासंगिक कथाएँ :

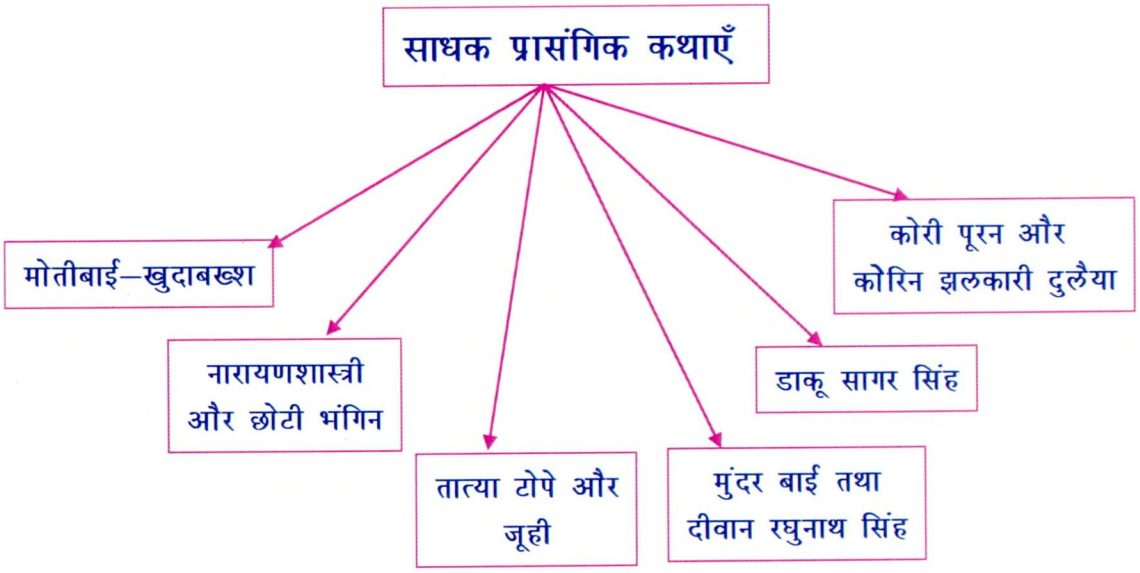

(i) मोतीबाई–खुदाबख्श :

मोतीबाई और खुदाब्ख्श की प्रेम कथा अपनी कमनीयता में लाजवाब है। वे दोनों राजा गंगाधरराव की रंगशाला में हुए नाटक के मध्य आमने–सामने होते हैं। मोतीबाई अभिनय के दौरान खुदाबख्श की ओर आकृष्ट हो जाती है। यह बात राजा को नापसंद आती है वह खुदाबख्श को देश–निकाला दे देता है। रानी के राज्य में यह क्षमा प्राप्त कर पुनः झाँसी आ जाता है, लेकिन दोनों प्रतिज्ञा करते हैं कि जब झाँसी स्वतंत्र हो जायेगी तब विवाह करेंगे। दोनों डटकर समाज और झाँसी की रानी के युद्ध में सहायक सिद्ध होते हैं और अंतिम साँस तक जूझकर बलिदान होते हैं।

(ii) नारायण शास्त्री और छोटी भंगिन की कथा :

नारायण शास्त्री और छोटी भंगिन की कहानी जहाँ सनसनीखेज है वहाँ युगीन यथार्थ के साथ प्रेम और समाज के टकराव की समस्या को भी प्रस्तुत करती है। नारायण शास्त्री झाँसी का कर्मकाण्डी ब्राह्मण है। उसका प्रेम घर में सफाई के लिए आनेवाली भंगिन छोटी के साथ हो जाता है। इस बात की चर्चा झाँसी में होने लगती है। शास्त्री से ईर्ष्या करने वाले लोग शास्त्री के घर की सांकल बाहर से तब बंद कर देते हैं जब कि छोटी भंगिन उनके घर के भीतर थी। पहले तो शास्त्री दरवाजा खोलने की कोशिश करते हैं; लेकिन असफल होने पर घबराने लगते हैं। छोटी जीवट की स्त्री है। वह शास्त्री की रक्षा के लिए कुछ भी करने को तैयार थी और जान पर खेल जाना चाहती थी। शास्त्री ने उसे समझाया कि जो लोग तुझे अपनी ओर आकृष्ट करने की कोशिश करते हैं उनके नाम राजा के सामने पेश होने पर ले देना। शास्त्री ने छोटी को अनेक जनेऊ दिए और कहा कि राजा को ये जनेऊ दिखाकर कहना कि उन लोगों ने अपने जनेऊ उतारकर मुझे दिए हैं। छोटी खपरैल से कूदकर अपने घर चली गई और नारायण शास्त्री की चर्चा सारे शहर में बच्चे–बच्चे की जुबान पर आ गयी। मामला राजदरबार तक पहुँचा।

शास्त्री और छोटी दोनों को बुलाया गया। शास्त्री से राजा ने पूछताछ की तो शास्त्री ने अपराध स्वीकार कर लिया। राजा ने छोटी को देश–निकाले का दण्ड दिया। दण्ड व्यवस्था सुनकर छोटी आगे आई और बोली कि शास्त्री का कोई अपराध नहीं है। वही उनके पीछे पड़ गयी थी। उसका अपराध गंभीर है। उसके दण्ड को बढ़ाकर शास्त्री को क्षमा कर दिया जावे। उसने आगे कहा कि वह सिर कटाने को तैयार है। शास्त्री ने प्रायश्चित्त से इनकार कर दिया और छोटी से कहा कि वह यज्ञोपवीत दिखाकर औरों की पोल खोल दे। छोटी ने

यज्ञोपवीन दिखाए किन्तु राजा सच्चाई समझ गया और शास्त्री को भी झाँसी छोड़ने की आज्ञा दे दी। शास्त्री और छोटी झाँसी छोड़कर बाहर चले गए और किसी प्रकार पति–पत्नी के रूप में अपना जीवन चलाने लगे। जब रानी लक्ष्मीबाई ने अँग्रेज़ों से संघर्ष किया और क्रांति की लहर देश में फैलने लगी तब शास्त्री और छोटी ने क्रांति को भड़काने में योग दिया और झाँसी के पतन के समय वे झाँसी की रक्षा में बलिदान हो गये।

(iii) तात्या टोपे और जूही की कथा :

जूही अपने प्रेमी पर फिदा है और तात्या टोपे देशानुराग में उन्मत्त है। मोतीबाई के सुझाने पर वह जूही के प्रणय को स्वीकार करता है और जूही का बलिदान उसे अपनी धुन में अग्रसर करता चला जाता है। जूही रानी की सेना की सदस्या होने के कारण छावनियों में नृत्यगान कर सैनिकों को अँग्रेज़ों के विरुद्ध भड़काती है। वह तात्या पर मुग्ध हो जाती है। मोतीबाई के कहने पर तात्या जूही से स्नेह का व्यवहार करता है। परंतु 'निरा' सैनिक होने के कारण वह जूही की कोमल–भावनाओं को ठीक से नहीं समझता। कालपी में राव साहब आदि के कहने से तात्या उससे नृत्य का आग्रह करता है। स्वाभिमानी जूही तात्या की इस प्रार्थना को ठुकरा देती है। अन्त में ग्वालियर में अपने कर्तव्य को पूर्णतयता निभाती हुई बलिदान हो जाती है। इस तरह तात्या टोपे तथा जूही का प्रेम असफल हो जाता है।

(i) मुन्दरबाई तथा दीवान रघुनाथसिंह की कथा :

मुंदरबाई का संसर्ग रघुनाथसिंह के साथ उस समय होता है जब वह नत्थेसिंह के आक्रमण को विफल करता है और रानी मुन्दरबाई के हाथों उसे प्रसन्न होकर लड्डू खिलवाती है। युद्ध में दोनों को एक ही तोपखाने के संचालन पर

लगाया जाता है। दोनों की स्वर्ग के बाद मिलने की कामना है। मुन्दरबाई के मर जाने के बाद रघुनाथसिंह उसका, रानी के शव के साथ ही गंगादास की कुटी में दाह–संस्कार कर देता है और अंत में स्वयं भी अँग्रेज़ों से टक्कर लेता हुआ प्राण विसर्जन कर देता है।

(v) डाकू सागरसिंह :

शक्ति का जब सदुपयोग नहीं होता तो वह पथभ्रष्ट होकर गलत रास्ते पड़ जाती है और सागरसिंह जैसे वीर, डाकू बन जाते हैं। सागर सिंह के ही शब्दों में – "हमारा वंश सदा लडाइयों में भाग लेता रहा है। महाराज ओरछा की सेवा में लड़ा। महाराज ने छत्रसाल की सेवा में रहकर युद्ध किए। जब अँग्रेज़ आए तब उनकी अधीनता जिन ठाकुरों ने स्वीकार नहीं की, उनमें हम लोग भी थे। हमको जब दबाया गया तो हम लोग बिगड़ खडे हुए और डाके डालने लगे। मैं अपने लिए और अपने साथियों के लिए गंगाजी की शपथ लेकर कह सकता हूँ कि हम लोगों ने स्त्रियों और दीन–दरिद्रों को कभी नहीं सताया।"★ *(झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, पृ. 202)* रानी ने अपनी सहेलियों की सहायता से युद्ध करके सागरसिंह को पकड़ा और क्षमा कर दिया। कुँवर भी नमकहलाल निकला। अपने सभी साथियों और रिश्तेदारों को फौज में भर्ती कर दिया और अंत तक रानी की सेवा में रहकर देशरक्षा के हित में बलिदान हो गया। रानी की शासन–व्यवस्था एवं प्रजा–वत्सलता दिखाने के लिए इस कथानक की उपयोगिता स्वयं सिद्ध है।

(vi) कोरी पूरन और कोरिन झलकारी दुलैया की कथा :

कोरी पूरन और कोरिन झलकारी दुलैया दोनों पति–पत्नी हैं। कोरी तोपखाना संभाले अन्य कोरियों के साथ काम करता है। झलकारी रानी लक्ष्मीबाई

की प्राण रक्षा के लिए स्वयं रानी का वेश धारण करके अँग्रेज़ी सेना के जनरल रोज़ को भुलावे में डालती है और उन्हें छुटपुट मुठभेड़ में उलझाए रखती है ताकि रानी लक्ष्मीबाई सुरक्षित स्थान पर पहुँच सकें।

3.2. 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' का कथा संविधान :

'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एक सुगठित ऐतिहासिक कथानक वाला उपन्यास है। कथानक और वह भी उपन्यास का, यदि औत्सुक्य को त्याग कर चलेगा तो उसमें नीरसता का बोल–बाला हो जाएगा। वृंदावनलाल वर्मा ने इसका पूरा–पूरा ध्यान रखा है। इतिहास को कथा का रूप देने में उन्हें यथेष्ट सीमा तक सफलता प्राप्त हुई है। उन्होंने घटनाओं को इस प्रकार एक दूसरे से जोड़ा है कि वे कार्य–कारण सूत्र में निरंतर आगे बढ़ती चली जाती हैं। उपन्यास के प्रारंभ और अंत में लेखक ने जो सामग्री दी है वह प्रकट करती है कि इस कृति की पृष्ठभूमि ही नहीं, वरन् संपूर्ण ताना–बाना भी इतिहाससम्मत घटनाओं द्वारा निर्मित हुआ है। प्रमुख घटना चक्र इतिहास पर आधारित है तथा उपन्यासकार ने यथेष्ट परिश्रमपूर्वक इतिहास की शोध की है और इस कृति में उसका सृजन किया गया है। इतिहास न रोचक होता है और न सरस। लेखक ने इन गुणों का प्रादुर्भाव करने के लिए कुछ घटनाओं और पात्रों की आयोजना अपनी कल्पना शक्ति द्वारा अवश्य की है। आदर्श प्रेमी युग्मों की अवतारणा का प्रारूप वर्माजी के उपन्यासों में सर्वत्र एक–सा स्वरूप ग्रहण करता है। वे भोग की अपेक्षा उद्देश्य की ओर उन्मुख रहकर अपने को उत्सर्ग कर देने की अदम्य आकाँक्षा से ओतप्रोत रहते हैं।

कथानक को लक्ष्मीबाई की भूमिका के चारों ओर घूमता देखकर ही आलोचक इसे रानी की जीवनी कहना चाहते हैं। इतिहास और उपन्यास के बीच द्वंद्व प्रारंभ से अन्त तक दृष्टिगोचर होता है। उपन्यासकार ने पूरी चेष्टा की है कि दोनों में से किसी के साथ अन्याय न हो, लेकिन कुछ झुकाव इतिहास की ओर

हो जाने से कलात्मकता का ह्रास हुआ है जिसकी पूर्ति इतिहासरस द्वारा हो जाती है। वर्मा की सर्वाधिक शक्ति इस बात को सिद्ध करने में लगी है कि जो कुछ कहा जा रहा है पूर्णतः ऐतिहासिक है एवं रानी के चरित्र की इस प्रामाणिकता को सिद्ध करने के लिए ही उन्होंने इतिहास विषयक इतने प्रमाण जुटाये हैं।

कथानक रानी को 1857 को क्रांति की मुख्य सूत्रसंचालिका के पद पर प्रतिष्ठित करता है जो इतिहास समर्थित तथ्य है, लेखक की कल्पना नहीं। घटनाक्रम की जटिलता एवं सजीवता पाठक के समक्ष इस क्रांति को साकार करने में समर्थ है। यदि उपन्यासकार पर इतिहास का भूत सवार न होता तो वह कुछ घटनाओं और अनेक ब्यौरों को काट सकता था, लेकिन ऐसा करना उसे इतिहास के साथ–अन्याय प्रतीत होता लगता है, अतः उसने आग्रहपूर्वक यह सब किया है। रचना–प्रक्रिया की दृष्टि से इस कृति को पूर्ण सफल नहीं माना जा सकता; क्योंकि मूल संवेदन–बिंब को रचना हेतु सृष्टा मन के द्वंद्व को अन्विति तक नहीं पहुँचने दिया है। इसमें इतिहास, रचना का रूप ग्रहण नहीं कर पाया है। जिस सीमा तक इसमें ऐतिहासिकता का आग्रह है उसी अनुपात में औपन्यासिकता पिछड़ी गयी है। इस विषय में लेखक का आग्रह इतिहास पर है। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि ''मैं आप लोगों को कभी सैकड़ों वर्ष पीछे ले जाता हूँ और कभी उससे भी अधिक, परन्तु इतिहास की उदासीनता में इसको फिर भी जकड़े रहता हूँ।''★ *(ऐतिहासिकता और हिन्दी उपन्यास, डॉ. मक्खनलाल शर्मा, प्रेमशील प्रकाशन, पृ. 161)* उनका उद्देश्य है भूतकाल की ऐसी तस्वीर पेश करना जिसमें ग्राह्य और अग्राह्य दोनों रूप पाठकों के समक्ष आ जाएँ। वे केवल गौरव–गाथावादी इतिहास के उपासक नहीं हैं; क्योंकि उससे पाठक वर्तमान को भूलकर पलायनवादी बन जाता है। वे पाठक को उत्तेजित करके वर्तमान और विशेषतः भविष्य के लिए अधिक प्रबल बनाने के पक्षधर हैं। पाठकों को भूतकाल में ले जाते समय

आग्रहमुक्त होने का आश्वासन चाहते हैं; क्योंकि, वे इसी दृष्टि से इतिहास का प्रयोग करते हैं। लेकिन जब पाठक उपन्यास को समाप्त करने के बाद वर्तमान में लौटता है तो वह उसे अधिक सशक्त स्फूर्तिमय और परिस्थितियों के विरुद्ध खड़े होकर उन्हें अपने अनुकूल बनाने की जुझारु शक्ति से संपन्न देखना चाहते हैं। उनका विश्वास है कि उनके उपन्यासों द्वारा इस उद्देश्य की पूर्ति होना असंभव है। यही कारण है कि 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' उपन्यास में उनका आग्रह इतिहास पर विशेष रूप से रहा है और इसके लिए उन्होंने औपन्यासिकता का बलिदान करने में भी संकोच नहीं किया है।

'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' ऐतिहासिक कला सृष्टियों में अपूर्व है। इसमें इतिहास और साहित्य का अद्‌भुत तथा सफल संयोजन है। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का, बाल्यकाल से आद्योपान्त शौर्यजीवन तथा उससे संबंद्ध घटनाएँ इस उपन्यास में आधार हैं, जिसमें लक्ष्मीबाई छोटी अवस्था में ही अधिक वय वाले, प्रौढ़, झाँसी के नृप गंगाधरराव की स्त्री बनती है, पुनः पुत्रवती होती है। दुर्भाग्यवश यह संतान काल कवलित होती है अतएव गंगाधरराव की मृत्यु के समय दामोदरराव को गोद लेकर राज्य की रक्षा करती है। परन्तु राजनीतिज्ञ अँग्रेज़ उस गोद को अवैध स्वीकार कर, उस राज्य को अपने अधीन कर लेते हैं और समयानुसार तत्युगीन वैषम्यता, शक्तिहीनता, परस्पर द्वेष, असंगठन से पर्याप्त लाभ उठा शनैःशनैः प्रत्येक भारतीय विश्रृंखलित राज्य को अपने आधीन करते जाते हैं। उस युग में भी कुछ ऐसे व्यक्ति थे जिनके अन्दर देश–प्रेम की पवित्रता थी। वे अँग्रेज़ों के षडयंत्रों को भली–भाँति समझते थे। तात्या टोपे और लक्ष्मीबाई के अदम्य उत्साह एवं साहसपूर्ण कर्तव्य से सभी प्रांतों और राज्यों में 1857 में गदर–क्रान्ति होती है – परतंत्रता की, दासता की कड़ियों को तोड़ने का प्रयत्न होता है।

झाँसी पर लक्ष्मीबाई चतुराई से आधिपत्य स्थापित किये रहती है। अँग्रेज़ निरंतर युद्ध और आक्रमण से उसे पराजित नहीं कर पाते। परंतु दूल्हाजू सरदार को अँग्रेज़ अपनी ओर मिला लेते हैं, जो युद्ध काल में ओर्छा फाटक खोल देता है और अँग्रेज़ भीतर प्रवेश कर जाते हैं।

लक्ष्मीबाई दृढ़ता और धैर्य से युद्ध करती रहती है, परंतु उसके प्रमुख सरदार, गोलंदाज, तोपची, सैनिक बुरी तरह मारे जाते हैं, तो वह कुछ सवारों को लेकर अँग्रेज़ों के व्यूह को चीरती निकल भागती है और पेशवा रावसाहब की सेना के साथ जा मिलती है। रानी तथा तात्या टोपे किसी तरह पेशवा तथा नवाब आदि की सम्मिलित सेना को लेकर ग्वालियर जीतकर, पुनः सैनिकों की अनुशासनहीनता, पेशवा की विलासिता आदि प्रमुख कारणों से उसे (ग्वालियर) खो बैठते हैं और ग्वालियर युद्ध में ही रानी पुनः अँग्रेज़ों के छक्के छुड़हाती दामोदरराव (गोद लिया पुत्र) को लिए भाग निकलती है, परंतु घायल हो जाती है।

रानी के देशप्रेमी सरदार, दीवान रघुनाथसिंह, गुलाममुहम्मद, देशमुख आदि रानी का पीछा करनेवाले सैनिकों को मार भगाते हैं और रानी के शव का दाह–संस्कार कर एक चबूतरा बना देते हैं, जिसे अँग्रेज़ पता नहीं लगा पाते। इस प्रकार रानी तथा तत्युगीन देश--प्रेमियों के द्वारा किया गया संग्राम भारत के स्वतंत्रता प्रेमियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है। रानी की चारित्रिक दृढ़ता तथा वीरता देख झाँसी के युद्ध के जनरल रोज़ ने कहा था – "She was the best and the bravest of them all."★ *(वृंदावनलाल वर्मा साहित्य और समीक्षा, सियारामशरण प्रसाद, साहित्य प्रकाशन, पृ. 162)* इस तरह उपन्यास में आधिकारिक कथा और प्रासंगिक कथाओं का पारस्परिक संबंध अति सुगठित और औचित्यपूर्ण है।

4. 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' के कथानक की विशेषताएँ :

यह उपन्यास अठारह सौ सत्तावन की प्रथम क्रांति से संबंधित है। उपन्यास महारानी लक्ष्मीबाई के शौर्य, साहस, देशप्रेम आदि की उत्कृष्ट भावभूमि युक्त चरित्र पर आधारित है। वह स्वतंत्रता संग्राम की एक ऐसी चिनगारी थी, जिसने जन–जन के मन में देश की स्वतंत्रता की अग्नि प्रज्वलित कर दी थी। इसी के परिणामस्वरूप आज हम स्वतंत्र हैं।

उपन्यास का कथानक पूर्णतः ऐतिहासिक है। उस युग की राजनीति, जन जीवन और युद्धों आदि का बड़ा ही सजीव चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। लार्ड डलहौज़ी की साम्राज्य लिप्सा ने जिस 'हड़पनीति' को हमारे देश में प्रचलित करवाया, उससे हमारे विशाल देश में किस प्रकार अँग्रेज़ों के प्रति क्षोभ उत्पन्न हुआ, इसका बड़ा ही मार्मिक और यथार्थ चित्र उपन्यासकार ने इस कथानक के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

मात्र तेरह वर्षीय मनू किस प्रकार देश प्रेम और देश स्वातंत्र्य की भावनाओं से अनुप्राणित है इसका बड़ा ही सुन्दर चित्र हम उपन्यास में देखते हैं। यही बालिका मनू झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के रूप में विकास पाती हुई, वीरांगना लक्ष्मीबाई के मात्र तेईस वर्षीय प्रचण्ड दुर्गास्वरूप के बलिदान के साथ अपनी इहलीला समाप्त करती हुई भारतीय जनता के मन पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ जाती है। भारतवर्ष हमारा है और हम, इसके स्वामी हैं। यह भावना जनता को अँग्रेज़ी साम्राज्य की जड़े भारत भूमि से उखाड़ने में सहायक होती है। उपन्यास का केन्द्र बिन्दु रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र है इसलिए उपन्यास का मूल कथानक उन्हीं के उदात्त चरित्र, उनके शौर्य और साहस को लेकर चला है। उनके इस जीवन में भारतीय संस्कृति का पूर्णतः पोषण हुआ है। भारतीय संस्कृति की धार्मिक भावना इस उपन्यास में स्पष्ट होकर सामने आई है।

'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' का लक्ष्य स्वराज्य प्राप्ति के लिए अटूट संघर्ष करना है। इस ध्येय के प्रति उपन्यास के प्रारंभ से ही नायिका की निर्भ्रांत दृष्टि प्रकट होती है। रानी इस दिशा में क्रमशः प्रयत्नशील होती है। विरोधी प्रकृति सामने आती है। रानी पूर्ण शक्ति और साधनों को झोंककर संघर्षरत होती है। उसका प्रयत्न सुविचारित, गंभीर और सुनियोजित है।

कथानक और पात्रों के अन्योन्याश्रयित्व के माध्यम से जो लाघव उत्पन्न हुआ है उससे उपन्यास का संघर्ष तीव्रता ग्रहण करता जाता है और कथानक की गति अत्यन्त क्षिप्र हो उठती है। रानी को स्वराज्य–स्थापना में सफलता प्राप्त नहीं होती; किन्तु वह इस महत् आयोजन का प्रारंभ करके एक ऐसी चिनगारी सुलगा रही है जो कालान्तर में अँग्रेज़ों के साम्राज्य को जलाकर खाक कर देगी। वह जानती है और इस बात का उसे संतोष है कि वह नींव का पत्थर बनने जा रही है। उसी नींव पर देश की आज़ादी का महल खड़ा हुआ जिसने रानी के स्वप्न को साकार किया। इस प्रकार हमें स्पष्टतः प्रतीत होता है कि रानी का बलिदान सफल है। वह अपने उद्देश्य को प्राप्त करती है और उस महान साधना का श्रीगणेश हो जाता है जिसका स्वप्न उसने देखा था। संगीन लगने पर रानी सोचती है, 'स्वराज्य की नींव का पत्थर बनने जा रही हूँ।'★ *(झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, पृ. 332)* और इस प्रकार उपन्यास के प्रारंभ में घोषित संकल्प की पूर्ति के साथ ही उपन्यास का अन्त हो जाता है।

यथार्थवाद के अन्तर्गत वृंदावनलाल वर्मा ने परिवेशगत सच्चाइयों को प्रमुखता प्रदान की, क्योंकि उन्हें बुंदेलखंड की प्रकृति एवं वातावरण प्रमुख रूप से अपनी ओर खींचते रहे। इस उपन्यास में सामान्य और विशिष्ट को इस प्रकार संग्रथित किया गया है कि वे अभेद बन गए हैं। लक्ष्मीबाई व्यक्ति (ऐतिहासिक व्यक्तित्व) होकर भी सामाजिक चेतना की प्रतीक बनकर आविर्भूत हुई है। उसकी

व्यक्तिगत क्रियाएँ असंख्य भारतीय जनता की आकांक्षाओं एवं आदर्शों को प्रतिफलित करती हैं। लक्ष्मीबाई की महानता उसके उन वैयक्तिक गुणों तक सीमित नहीं है जो किसी व्यक्ति को अपने आसपास के व्यक्तियों की तुलना में अधिक आदर्शवादी या धार्मिक बना देते हैं; वरन् वह अपने युग की जीवित प्रतिच्छाया तथा युगीन आकांक्षाओं का केन्द्र है। उसमें युगीन यथार्थ–अपने अधिकतम संभव रूप में साकार हो उठने के कारण वैयक्तिकता और सामाजिकता की अन्विति का स्वरूप ग्रहण कर गया है जिससे उसकी गिनती अमर पात्रों में होने लगी है। कथा और शिल्प की परस्पर पूरकता के कारण 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' बृहत्तर यथार्थ को उसकी ऐतिहासिक भूमिका में सफलतापूर्वक प्रस्तुत करने में समर्थ है।

ऐतिहासिक यथार्थ की प्रस्तुति के साथ ही साथ उपन्यासकार ने अनेक सामाजिक समस्याओं को भी मुखरित किया है। जाति–पाँति एवं सम्प्रदायवाद की समस्या अपने अनेक रूपों में सामने आई है। छुआछूत के प्रश्न को शादी–विवाह और प्रेम के साथ जोड़ा गया है जिससे अनेक सामाजिक प्रश्न साकार हो उठे हैं। जनेऊ प्रकरण के साथ ही साथ ब्राह्मण और भंगिन का प्रेम–प्रसंग प्रस्तुत कर वर्माजी ने अपने उद्देश्योन्मुखता को प्रत्यक्ष कर दिया है। यह समस्या राजनीति से संयुक्त है।

अँग्रेज़ों ने अपनी साम्राज्यवादी नीति को निरन्तर पुष्ट करते रहने के लिए 'फूट डालो राज्य करो' के अन्तर्गत हिन्दुओं और मुसलमानों के भेदभाव को उभार कर उन्हें आपस में लड़ाया। इस नीति का अच्छी तरह रहस्योद्घाटन भी इस कृति में हुआ है। एलिस अँग्रेज़ी नीति का सूत्र स्पष्ट करते हुए गार्डन से कहता है – "मदरसों के खोलने की जल्दी मत करना। नौकरियाँ देने में हिन्दू–मुसलमानों का लाभकारी समीकरण रखना और यथाशक्ति दोनों को उनके अलग–अलग हक समझाते रहना।"★ *(झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन,*

पृ. 126) उसका परिणाम यह निकला कि जो हिन्दू और मुसलमान साथ–साथ रहते आये थे तथा अपनी–अपनी परंपरा और विश्वास के अनुसार त्योहारों को मानते थे, उनमें अँग्रेज़ के इशारे पर फूट डाल दी और मुहर्रम के मौके पर झगड़ा खड़ा हो गया। झगड़े का कोई आधार नहीं था। अँग्रेज़ों के एजेंट पीरअली ने दुर्गा नर्तकी का मज़ाक उड़ाया और उसने जवाब दे दिया। वर्माजी की सूक्ष्म दृष्टि इस संदर्भ को प्रस्तुत करते हुए बताती हे – "एक सुन्नी औरत ने, सो भी नर्तकी, वेश्या ने, एक शिमा मर्द पर, मुहर्रम के दिनों में लानत भेजी! शिया सुन्नियों के झगड़े का इस अत्यंत क्षुद्र घटना के कारण सूत्रपात हुआ।"★ *(झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, पृ. 207–208)* समस्या की प्रस्तुति के साथ वर्माजी ने लक्ष्मीबाई की दूरदर्शिता एवं सर्वधर्मसमभाव की दृष्टि से इसका समाधान भी प्रस्तुत कर दिया है कि सौहार्द्र, सहिष्णुता एवं प्रेम से सभी समस्याएँ हल की जा सकती हैं।

वर्माजी युद्ध को किसी बृहत्तर उद्देश्य की पूर्ति का साधन मानकर चले हैं। इस विषय में उनका मन्तव्य रानी के कथन से खूब ध्वनित हुआ है। लक्ष्मीबाई के चरित्र द्वारा अथ से इति तक यह दिखाने का प्रयास किया है कि निष्काम कर्मयोग के आधार पर जीवन को महत्तम उद्देश्यों के लिए समर्पित किया जा सकता है। आत्मा की अमरता और उद्देश्य के प्रति पूर्ण समर्पण हेतु सतत प्रयत्नशील बने रहने की जो अमिट राग रंजित छवियाँ वर्माजी ने उकेरी हैं वे इस उपन्यास की सफलता को रेखांकित करती हैं। इस तरह कथा का विकास, रानी का अँग्रेज़ों के साथ युद्ध व पीर अली तथा दूल्हाजू की गद्दारी और षडयंत्र के द्वारा भली प्रकार किया गया है।

वर्माजी ने रानी तथा उसके निकट साथियों के आचरणानुमोदित विचारों से जिन अन्य आधुनिक समस्याओं का चित्रण किया है, वे प्रभावपूर्ण हैं। इसमें

हिन्दू–मुस्लिम ऐक्य तथा नारी समस्या उल्लेखनीय है। राहत गढ़ से आए पाँच सौ पठान, गुलाम गौस और खुदाबख्श–जैसे बलिदान देते हैं और गुलमुहम्मद रानी और उसके उद्देश्य के लिए जैसे फकीरी धारण करता है, वे सब मार्मिक हैं। हिन्दुओं के साथ स्वराज्य के लिए कंधे से कंधा मिलाकर मर मिटनेवाले ये मुसलमान अपने आचरण से जिस एकता की मार्मिक व्यंजना कर सके हैं, वे अनुपम हैं।

नारी समस्या एवं व्यर्थ रूढ़ियों के विरोध के संबंध में वर्माजी का निम्न स्वकथन प्रमाण है, जिसे समग्र नारी पात्र–रानी के जीवनचरित तथा विचारों की प्रेरणा से चरितार्थ करते हैं – ''वे अपने युग के उपकरण और साधन काम में लाती थीं। जिस समाज में उनका जन्म हुआ था, उसी में होकर उनको काम करना था, परंतु उस समाज की हथकड़ियों और बेड़ियों की उन्होंने पूजा नहीं की। वे अपने युग से आगे निकल गयी थीं किन्तु उन्होंने अपने युग और समाज को साथ ले चलने का भरसक प्रयत्न किया। झाँसी में और विशेषतः विंध्याखंड में साधारणतया, स्त्री की अपेक्षाकृत स्वतंत्रता और नारीत्व की स्वस्थता लक्ष्मीबाई के नाम के साथ बहुत संबद्ध है।''★ *(झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, पृ. 220–221)* उपन्यास में रानी कथित नारी–जीवन संबंधी सारगर्भित कथन यत्र–तत्र देखे जा सकते हैं। कहीं–कहीं लेखक ने आदर्श पात्रों के संवाद के रूप में, रानी के जीवन–चरित्र के सहज क्रम में कई विचारों को व्यक्त किया है, जिनके आधुनिक प्रेरणा की स्पष्ट छाप है। ये विचार युद्ध विरोध, युद्ध के प्रयोजन, गृहस्थाश्रम–गौरव, धार्मिक वितंडावाद, ऊँच–नीच–वैषम्य तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी संबंधी हैं।

रानी के जीवन चरित तथा उससे संबद्ध सन् 1857 की क्रांति के प्रामाणिक चित्रण के लिए वर्माजी ने अधिक से अधिक ऐतिहासिक सामग्री के समावेश का

खोजपूर्ण सहारा लिया है। यह इस ऐतिहासिक उपन्यास की खास विशेषता है। अधिकांश पात्र एवं घटनाएँ, युद्ध, स्थान आदि ऐतिहासिक हैं। पात्रों के जन–मन तथा युद्ध–घटनाओं के समय, आदि का तिथिवार तक सही–सही उल्लेख करने का प्रयत्न किया गया है। ऐतिहासिक पात्रों, ऐतिहासिक व्यक्तियों के बयानों, हुकमनामों, इश्तहारों, संधियों आदि के यथातथ्य ब्यौरे दिए गए हैं। जिस सन्–तिथि–को कोई बयान या हुकुम पढ़ा गया, या पत्र का आदान–प्रदान हुआ, उनका भी उल्लेख हुआ है।

लेखक ने इस उपन्यास में भवनों, मुहल्लों, स्थानों आदि की तब और अब दोनों की यथार्थ स्थिति दी है। अँग्रेज़ों द्वारा झाँसी–राज्य के अपहरण के समय, रानी द्वारा उच्चरित कथन को भी सही–सही उद्धृत किया गया है। वर्माजी ने कहीं उपन्यास की विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं–पात्रों पर भी अपनी टीका–टिप्पणियाँ की हैं, कहीं अँग्रेज़ों की जीत और भारतीयों की हार के कारणों का विश्लेषण, कहीं अँग्रेज़–नीति की मूल प्रेरणाओं का स्पष्टीकरण और कहीं उनके अमानवीय–क्रूर कृत्यों पर, व्यंग्यात्मक विधि से, अपनी भावात्मक प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की हैं। वस्तुतः स्थान–स्थान पर लेखक के अपने भाव–विचार, प्रतिक्रियाएँ, इतिहास चर्चा के अतिरिक्त अँग्रेज़ों के प्रति घृणा जगाने के उपकरण भी हैं।

वर्माजी ने उस युग एवं वातावरण को पूर्णतया साकार बनाने का प्रयत्न किया है और उसके लिए भी उन्होंने पाद–टिप्पणियाँ तथा परिशिष्ट में ऐतिहासिक प्रमाण दिए हैं। तत्कालीन चित्रकारों, संगीतज्ञों, कवियों, अभिनेता–अभिनेत्रियों के नाम प्रामाणिक हैं तथा उनके क्रियाकलापों से तत्युगीन कलात्मक प्रवृत्तियों की झाँकी मिल जाती है। आर्थिक दृष्टि से मज़दूर–किसान वर्ग, सामान्य जनता, सामंतों, सैनिकों और उगती जमींदारी प्रथा तक का परिचय दिया गया है। मिटती हुई पंचायत व्यवस्था का विशेष आलोचनात्मक, व्यंग्यात्मक वर्णन हुआ है।

उत्सव–त्यौहार, हिन्दू–मुस्लिम जनता की धार्मिक धारणाओं, जनेऊ के लिए शूद्रों के आंदोलन, नारियों के परम्परागत आचारों, दासी प्रथा आदि का चित्रण भी हुआ है। सामंतीय अत्याचार, दण्ड–विधान, राजकीय उपाधि–उपहारों तथा युद्धों का और भी सजीव चित्रण हुआ है। स्थानीय भाषा के आँचलिक उपकरण का भी प्रयोग हुआ है। इस तरह इस बृहद उपन्यास में रानी के शक्तिशाली व्यक्तित्व में मंगलकारी प्रवृत्तियों को उभारा गया है। यह इस उपन्यास की विशिष्टतम विशेषता है।

5. 'मृगनयनी' की संक्षिप्त कथावस्तु :

'मृगनयनी' वर्माजी का प्रसिद्ध–ऐतिहासिक उपन्यास है। इसका कथानक 15वीं और 16वाँ सदी के संधियुग की भारत की अस्त–व्यस्त राजनीतिक परिस्थिति से संबंधित है। कथानक का केन्द्र बिन्दु ग्वालियर राज्य है और उपन्यासकार ने यह प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया है कि किस प्रकार तत्कालीन युग में इतने बाह्य संकटों के होते हुए भी ग्वालियर राज्य, कला और साहित्य की उन्नति करते हुए अपनी स्वतंत्रता स्थापित रखने में समर्थ हुआ। यह युग वास्तव में राजनैतिक दृष्टिकोण से एक अंधा–युग था। चोरी और छोटे–छोटे राज्य कीड़े–मकोड़ों की भाँति बिलबिला रहे थे। इनके शासक, अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए सदा ही एक दूसरे से जूझा करते और इस प्रकार साधारण जनता की सुख और शांति को भंग करते। कहीं धर्म का बवंडर खड़ा किया जाता, तो कहीं समाज की रूढ़िगत मान्यताओं का, कहीं धर्मान्धता अपनी शक्ति प्रदर्शित करती और फल यह होता कि साधारण जनता बुरी तरह पीस दी जाती। सब ओर यही दीख पड़ रहा था।

ग्वालियर का राजा मानसिंह था। मुसलमान सुलतान ग्वालियर को हस्तगत करना चाहते थे। अनेक युद्ध हुए, भीषण से भीषण भूमिकाएँ बाँधी गईं पर

परिस्थितियों ने ग्वालियर को बचा लिया। इन युद्धों ने साधारण जनता की कमर और भी तोड़ दी। चारों ओर सामंतीय शासक अपने निजी स्वार्थों और सत्ता के लिए संघर्ष कर साधारण जनता की सुख–शांति एवं जीविकाओं का अपहरण करते हुए अपनी भूख को शान्त कर रहे थे, अपनी सत्ता को केंद्रित कर रहे थे, चाहे वे मानसिंह हो, चाहे गयासुद्दीन, सिकंदर लोदी अथवा महमूद बघर्रा। हमें इनके स्वार्थों में विशेष अन्तर नहीं जान पड़ता। किसी में सत्ता की भूख अधिक थी, किसी में कम। इतिहास के ऐसे ही अंध–युग में 'मृगनयनी' की कथा का जन्म होता है। मुख्य कथा इस प्रकार है :–

बहलोललोदी व उसके पुत्र सिकंदर लोदी ने ग्वालियर को हस्तगत करने के अनेक प्रयत्न किये पर असफल रहे। निराशा और खीझ से भरा हुआ बहलोल लोदी गाँवों में आग लगाता हुआ किसानों के खून–पसीने से उत्पन्न की हुई फसल को तहस–नहस करता हुआ एवं अपनी धर्मान्धता के कारण मंदिरों आदि को नष्ट करता हुआ लौट गया। बहलोल लोदी के पश्चात् उसका पुत्र सिकंदर लोदी दिल्ली की गद्दी पर बैठा और अपने उद्देश्य में असफल रहा। बहलोल लोदी व सिकन्दर लोदी के अतिरिक्त मालवा का गयासुद्दीन खिलजी भी ग्वालियर पर अपनी दृष्टि जमाए था। ग्वालियर पर आक्रमण करने के मूल में उसका मुख्य उद्देश्य राई गाँव की उन दो कुमारियों को हस्तगत करना था जिनके रूप और शौर्य की ख्याति दूर–दूर तक फैल चुकी थी। राई की ये कुमारियाँ अपनी वीरता, शौर्य एवं सुंदरता के लिए विख्यात थीं। बड़े–बड़े अरनों, नाहरों को मार देना उनके लिए साधारण बात थी। विलासी और रूप लोलुप राजा–नवाब इनके विषय में सुनते और इनको प्राप्त करने के लिए लम्बी–लम्बी भूमिकाएँ बाँधते। ग्वालियर के अधीन नरवर नाम का एक छोटा–सा राज्य भी था। ग्वालियर के तोमरों ने उसे कछवाहों से छीन लिया था। कछवाहों का राजा राजसिंह नरवर के समीप

चंदेरी में अपनी विलास प्रियता में डूबा हुआ था। किसी प्रकार अवसर आने पर नरवर को छीन लेने की योजनाएँ बना रहा था।

ग्वालियर में उस समय मानसिंह तोमर का राज्य था। उन्होंने भी उन कुमारियों के विषय में सुना। एक तो थी राई गाँव के किसान अटलसिंह गूजर की बहन निन्नी और दूसरी उन्हीं के साथ रहनेवाली अहीर कन्या लाखी। राई गाँव के पुजारी बोधन का राजा से परिचय था। गाँव में भी उसकी धाक थी। उसने ग्वालियर जाकर राजा को राई गाँव चलने का निमंत्रण दिया। दोनों कुमारियों, विशेषकर निन्नी की सुंदरता और वीरता की जी भर के सराहना की। राजा मानसिंह राई गाँव गये, शिकार का आयोजन हुआ और राजा निन्नी की वीरता देखकर स्तब्ध रह गये। एक जंगली अरने को उसने सींग पकड़कर धरती पर गिरा दिया। राजा मानसिंह ने उसके साथ विवाह का प्रस्ताव किया। निन्नी भी राजा की वीरता की गाथाएँ सुना करती थी। राजा के आकर्षण में बंध गई। मानसिंह और निन्नी का विवाह हो गया। राई की अल्हड़ कन्या निन्नी 'मृगनयनी' बनकर ग्वालियर के राज महलों में आ गई।

सुल्तानों ने जब मृगनयनी और मानसिंह के विवाह की बात सुनी तो वे और भी कुढ़ गये और ग्वालियर पर आक्रमण की सामूहिक योजना बनाने लगे। मानसिंह मृगनयनी को पाकर अत्यधिक प्रसन्न हुए। लाखी का प्रेम मृगनयनी के भाई अटल से था। अटल और लाखी परस्पर विवाह करना चाहते थे पर समाज और धर्म के ठेकेदारों को उनका विवाह मान्य न था। मुख्य बाधा थी वर्णाश्रम धर्म की। गाँव के पुजारी बोधन ने विवाह का सक्रिय विरोध किया। गूजर और अहीर में विवाह संबंध की आशा देना वर्णाश्रम धर्म का अपमान करना था। अटल और लाखी अपने प्रेम में दृढ़ थे। उन्होंने समाज और धर्म के विरुद्ध उठ खड़े होने का निश्चय किया। चुपचाप अपना विवाह कर एक रात नटों के एक दल के साथ

गाँव छोड़कर अन्यत्र चले गये। नटों के इसी दल की ही सहायता से गयासुद्दीन ने इन कुमारियों को हस्तगत करने की योजना बनाई थी। निन्नी तो चली गयी थी पर लाखी को अपने जाल में फँसा देखकर नट अपनी सफलता पर मुग्ध थे।

उधर मुसलमान सुल्तान चारों ओर से ग्वालियर पर आक्रमण करने की योजना बना रहे थे। ग्वालियर में संगीत और कला की धूम थी। मानसिंह मृगनयनी को भी गायन–वादन की कला में दीक्षित करना चाहते थे और उन्होंने इसका प्रबंध भी कर दिया। मृगनयनी शीघ्र ही इन कलाओं में दक्ष हो गई।

राजसिंह कछवाहे ने अपनी प्रियतमा 'कला' को जो विख्यात संगीतज्ञ बैजनाथ की शिष्या थी, गुरु समेत ग्वालियर के राज महलों में भेजना निश्चित किया जिससे वहाँ की सारी गुप्त बातों से परिचित हो जाए। कला और बैजनाथ ग्वालियर पहुँचे। कला तो अपने उद्देश्य को न भूली थी पर बैजनाथ मानसिंह जैसे आश्रयदाता को पाकर सब कुछ भूल गया। वह मृगनयनी को गायन–वादन की शिक्षा देता और इसी में संतोष मानता। दरबार में ही विजयजंगम नामक एक शैव भी था जो राजा का परम मित्र था। बैजनाथ और उसकी संगीत प्रतिस्पर्धा से राजमहलों का वातावरण गुंजायमान रहता।

मृगनयनी को मानसिंह की रानी बने पर्याप्त समय बीत चुका था। मानसिंह की आठ रानियाँ और थीं। फलतः गृह कलह का सूत्रपात हुआ। सबसे बड़ी रानी सुमनमोहिनी समस्त रानियों की प्रतिनिधि बनकर मृगनयनी के विरोध में आई। उसने मृगनयनी को नीचा दिखाने का पूर्ण निश्चय कर लिया था। परंतु मृगनयनी की सहिष्णुता ने गृहकलह को अधिक नहीं उभारा। हाँ, वह पनपती अवश्य गई।

उधर राजसिंह के सहयोग से गयासुद्दीन ने नरवर पर आक्रमण किया। अटल, लाखी व नटों का दल भी वहीं था। नट अवसर की ताक में थे और वे

लाखी को भाँति–भाँति के प्रलोभन दे रही थीं। लाखी ने पिल्ली की मनोवृत्ति को भाँप लिया और एक रात जब नट लोग रस्से के सहारे नरवर के किले से निकलने के प्रयत्न में थे, लाखी ने रस्सा काट दिया। नटों के षडयंत्र से उसे मुक्ति मिली। नटों का नाश हुआ। ग्वालियर से भी अब तक सहायता आ चुकी थी। फलतः नरवर को हस्तगत करने के गयासुद्दीन के सारे प्रयत्न धूल में मिल गये। नरवर को बचाने में सबसे बड़ा हाथ लाखी का था। उसी ने सैनिकों को सचेष्ट कर उन्हें गयासुद्दीन की सेना पर भीषण आक्रमण करने के लिए ललकारा था। मानसिंह भी ग्वालियर की सेना के साथ थे। जब उन्हें यह पता चला कि किले की रक्षा एक स्त्री ने की है तब वह समझ गये कि हो न हो, वह लाखी ही होगी। वे उसे ढूँढ़कर उससे मिले। उससे ग्वालियर चलने का आग्रह किया। अपने गले से मोतियों की एक माला उतारकार उन्होंने लाखी के गले में डाल दी। लाखी और अटल मानसिंह के साथ ग्वालियर आ गए।

सुमनमोहिनी को लाखी की उपस्थिति बहुत खली। उसने लाखी और मृगनयनी को विष देने की योजना बनाई। पान में विष मिलाकर इन लोगों के पास भेजा पर सफल न हुई। मृगनयनी और लाखी सुमनमोहिनी की दूषित मनोवृत्ति पहले ही भाँप चुकी थीं। इतना होने पर भी वे चुप रहीं।

बैजनाथ को नायक की उपाधि–से विभूषित किया गया। कला ने बैजनाथ को अपने आने का उद्देश्य याद दिलाया। वह अपना कार्य समाप्त कर चुकी थी। उसने बैजनाथ से चंदेरी लौट चलने का आग्रह किया। बैजनाथ–मानसिंह पर मुग्ध था। उसने सारा रहस्य मानसिंह को बता दिया। मानसिंह ने कला को चंदेरी भिजवा दिया।

अब की बार सिकंदर ने ग्वालियर पर आक्रमण किया। राई में भी एक गढ़ी बन चुकी थी। उसकी रक्षा का भार मानसिंह ने अटल और लाखी पर सौंपा।

दोनों ने गढ़ी की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की बलि दे दी। सिकंदर पराजित होकर लौट गया। मानसिंह और मृगनयनी, अटल और लाखी की मृत्यु का समाचार सुनकर अत्यधिक दुखी हुए। सिकंदर ने अबकी बार दूसरी ओर से आक्रमण करने का निश्चय किया। मानसिंह सिकंदर से भीषण प्रतिशोध लेना चाहते थे। उसके दो कारण थे। एक तो उसने बोधन शास्त्री को लखनऊ में फाँसी दी और दूसरे दूत बनकर गये मानसिंह के सेनापति निहालसिंह को दिल्ली में मार डाला था। युद्ध चल ही रहा था।

गयासुद्दीन ने अवसर देखकर पुनः नरवर पर आक्रमण किया। अबकी बार ग्वालियर से भी कोई सहायता न पहुँची। साल भर भूखे लड़कर, नरवर वासियों ने आत्मसमर्पण कर दिया। गयासुद्दीन ने नरवर की मूर्तियाँ और मंदिर ध्वस्त कर दिए। राजसिंह को नरवर प्राप्त करने की प्रसन्नता थी पर कला मूर्तियों और मंदिरों का यह ध्वंस न देख सकी। वह राजसिंह को छोड़कर चंदेरी चली गई।

अब तक गयासुद्दीन को उसके पुत्र नसीरुद्दीन ने विष देकर मार डाला था। गुजरात का शासक महमूद बघर्रा भी मर चुका था। सिकंदर भी ग्वालियर का विचार छोड़कर लौट गया और उसकी भी मृत्यु हो गई। फलतः बाह्य संकटों की इति हुई।

मृगनयनी के राजसिंह व बालसिंह नामक दो पुत्र भी हो चुके थे। राजा के सुमनमोहिनी के गर्भ से उत्पन्न हुआ एक पुत्र विक्रमादित्य पहले से ही था। उन्हें चिंता थी कि राज्य का उत्तराधिकारी किसे बनाया जाय? मृगनयनी ने राजा की चिंता का समाधान किया। एक पत्र उसने राजा के पास और दूसरा सुमनमोहिनी के पास इस आशय का भेजा कि राज्य का उत्तराधिकारी विक्रमादित्य है। राजसिंह व बालसिंह आजीवन अपने बड़े भाई की आज्ञा का पालन करेंगे।

मानसिंह, मृगनयनी का त्याग देखकर स्तब्ध थे। उन्होंने उससे उसका कारण पूछा। मृगनयनी ने इसे अपना कर्तव्य बताया। दोनों शांत थे। सामने लाखी की माला लटक रही थी। दोनों ने उसे देखा और नेत्रों में अश्रु छलक आये। वह माला अपनी सम्पूर्ण आभा के साथ दमक रही थी। उपन्यास में वर्णित कथा यहाँ समाप्त हो जाती है।

6. 'मृगनयनी' के कथानक की ऐतिहासिकता एवं वर्गीकरण :

कथानक उपन्यास का महत्वपूर्ण तत्व है। वृंदावनलाल वर्मा ने अपने उपन्यासों में कथानक तत्व को बड़ी सुंदरता से प्रस्तुत किया है। उनका 'मृगनयनी' उपन्यास का कथानक अत्यंत व्यवस्थित, प्रवाहमय और रोचक बन पड़ा है। वर्माजी ने 'मृगनयनी' उपन्यास को बहत्तर (72) खंडों में विभाजित किया है। इस विभाजन से उपन्यास में सरलता और स्पष्टता का संचार हो गया है।

'मृगनयनी' उपन्यास के कथानक को दो भागों में बाँटा जा सकता है – पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध। प्रथम भाग में आरंभ से लेकर मृगनयनी और मानसिंह की कथा आती है और उत्तरार्द्ध में इसके बाद की कथा समाविष्ट है। कथा का प्रथम भाग कथा संगठन एवं रोचकता की दृष्टि से जितना सुंदर बन पड़ा है, उतना उत्तरार्द्ध नहीं है। उसका कारण यह है कि उत्तरार्द्ध में लेखक का झुकाव अपने उद्देश्य की अभिव्यक्ति की ओर विशेष रहा। अतः जो रम्यता, सरसता और प्रभावशीलता इस उपन्यास के पूर्वाद्ध के कथानक में है, वह उत्तरार्द्ध में नहीं है।

'मृगनयनी' वर्माजी की ऐसी औपन्यासिक कृति है कि इसकी कथा में इतिहास और कल्पना का मणि कांचन संयोग दिखाई देता है। डॉ. शशिभूषण सिंहल के शब्दों में – ''मृगनयनी' में मानसिंह तथा मृगनयनी का क्रमबद्ध तथा इतिहास सम्मत वर्णन करते हुए भी कथानक को सजान–संवारने के हेतु कल्पना,

व्याख्या तथा परंपराओं को पर्याप्त स्थान मिला है। 'मृगनयनी' में इतिहास और उपन्यास के तत्वों का समन्वय है।''★ *(वृंदावनलाल वर्मा कृत मृगनयनी एक विवेचन, डॉ. माया अग्रवाल, अनीता प्रकाशन, पृ. 51)* इस उपन्यास के कथानक में वर्माजी ने तीन आधार लिये हैं – 1. ऐतिहासिकता, 2. किंवदंतियों का आश्रय, 3. कल्पना का आश्रय।

6.1. ऐतिहासिकता :

इस उपन्यास का कथानक पंद्रहवीं शताब्दी के अन्त और सोलहवीं शताब्दी के अन्त का है। इस समय दिल्ली पर लोदी वेश का शासन था और ग्वालियर में मानसिंह तोमर राज्य करता था। मानसिंह सन् 1486 ई से 1516 ई. तक ग्वालियर का शासक रहा। वह सिकंदर लोदी के आक्रमणों से अविचलित रहा और अपने राज्य की सुख–समृद्धि के लिए सदैव प्रयत्न करता रहा। कर्तव्य के साथ उसने कला का भी सदैव ध्यान रखा। मानसिंह तोमर एक ऐतिहासिक पात्र है और इतिहास ग्रंथों में उसके शौर्य एवं कला–प्रियता का उल्लेख है।

राजा मानसिंह तोमर को कर्तव्य और कला की प्रेरणा देने वाली महान विभूति मृगनयनी ही थी। इसके विषय में वर्माजी ने उपन्यास 'परिचय' में लिखा है – ''गूजरी रानी मृगनयनी के साथ मानसिंह का विवाह सन् 1492 के लगभग हुआ होगा। मान–मंदिर और गूजरी महल के सृजन की कल्पना की प्रेरणा मृगनयनी से मिली होगी। बैजनाथ नायक (बैजूबावरा) मानसिंह मृगनयनी के गायक थे। गूजरी टोडी, मंगल गूजरी इत्यादि राग इसी मृगनयनी के नाम पर बने हैं।''★★ *(मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, परिचय, पृ. 6)* मृगनयनी राई गाँव के गूजर की कन्या थी। आज भी राई गाँव के समीप बहने वाली साँक नदी से ग्वालियर तक एक पुरानी नहर के चिन्ह मिलते हैं। इस

प्रकार मानसिंह और मृगनयनी के प्रेम, कर्तव्यनिष्ठा और लोकप्रियता के प्रसंग इतिहास सम्मत हैं।

इस उपन्यास में चित्रित सिकंदर के आक्रमण ऐतिहासिक हैं। उसने पाँच बार आक्रमण किया था और पाँचों बार असफलता का मुख देखना पड़ा। इसके साथ ही इस उपन्यास में वर्णित सुल्तान गयासुद्दीन तथा उसके कामुक पुत्र नसीरुद्दीन के प्रसंग भी ऐतिहासिक हैं। 'मृगनयनी' में वर्णित महमूद बघर्रा का उल्लेख इतिहास में भी आता है। उसका कलेवा और भोजन फारसी की तारीख 'मीराने सिकंदरी' में अंकित हैं। इस उपन्यास में विजयजंगम और बोधन पुजारी से संबंधित कथा–प्रसंग भी ऐतिहासिक हैं। बोधन के संबंध में स्वयं लेखक ने उपन्यास के 'परिचय' में लिखा है – ''बोधन ब्राह्मण ऐतिहासिक व्यक्ति है। उसके मारनेवालों की बर्बरता का मैंने बहुत थोड़ा वर्णन किया है। उसके कुरूप का लाघव मात्र प्रस्तुत किया है, करना पड़ा है।''★ *(मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, परिचय, पृ. 9)* इस प्रकार यह स्पष्ट है कि इस उपन्यास के कथानक के प्रमुख प्रसंग ऐतिहासिक हैं।

मृगनयनी में ऐतिहासिकता न केवल कथा के चौखटे में है अर्थात् ऐतिहासिक संदर्भ में है बल्कि कथानक के सभी आधिकारिक तत्वों में है। महमूद बघर्रा के अतिमानवीय भोजन के लिए भी – जिसे पाठक शुद्ध कल्पित और हास्यास्पद मानता है – लेखक 'मीराने सिकंदरी' का हवाला देता है।

कथानक पूर्णरूपेण ऐतिहासिक है यद्यपि जनश्रुतियों को भी आधार माना गया है। बिखरी घटनाओं का संबंध सूत्र जोड़ने के लिए उपन्यासकार ने कल्पना से भी कार्य लिया है जो स्वाभाविक है। उपन्यास के पात्र पूर्णरूपेण ऐतिहासिक हैं, कुछ पात्र लेखक की कल्पना और जन श्रुतियों के परिणाम हैं। ऐतिहासिक

पात्रों में प्रमुख मानसिंह (1486–1516), सिकंदर लोदी, गयासुद्दीन खिलजी, नसीरुद्दीन, महमूद बघर्रा, राजसिंह, बैजनाथव, विजयजंगम और मृगनयनी आदि हैं। जनश्रुतियों और किंवदंतियों के आधार पर जिन पात्रों की सृष्टि हुई है उनमें लाखी और अटल प्रमुख हैं। पिल्ली, पोटा और कला लेखक की कल्पना से प्रसूत पात्र हैं।

सुल्तानों और राजाओं के पारस्परिक युद्ध ऐतिहासिक हैं। मानसिंह और मृगनयनी के प्रेम का आधार ग्वालियर राज्य का गजेटियर है। मृगनयनी के शौर्य से संबंधित घटनाओं का भी उल्लेख गजेटियर में है। मानसिंह और विजयजंगम की मित्रता, बोधन की हत्या भी इतिहासानुमोदित है। उत्तराधिकार के प्रश्न पर मानसिंह और सुमनमोहिनी तथा मृगनयनी के बीच जो घटनाएँ घटित हुई थीं, उनके संबंध में उपन्यासकार ने ग्वालियर किले के गाइड (Guide) की बातों को प्रमुखता दी है। नसीरुद्दीन की विलासिता, बघर्रा की कलेवा आदि के वर्णनों का आधार भी इतिहास और तत्कालीन अरबी, फारसी के ग्रंथ हैं। ग्वालियर राज्य के जिन भवनों को मानसिंह ने मृगनयनी की प्रेरणा से बनवाया था, वे आज भी हैं। उस नहर के अवशेष भी आज देखने को मिलते हैं जिसकी रक्षा करते हुए अटल व लाखी ने अपने प्राण दिये थे। नरवर का किला भी अपने भग्नावशेष लिये आज भी उपस्थित है। उसके संबंध में वर्माजी ने एक पत्र में सूचित किया था कि ''राजसिंह को नरवर मिल गया और उसके वंशजों के हाथ–अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक रहा, फिर माधव जी सिंधिया ने ले लिया।''★ *(वृंदावनलाल वर्मा, उपन्यास और कला, शिवकुमार मिश्र, रवि प्रकाशन, पृ. 70)*

जहाँ तक इस उपन्यास के कथानक की ऐतिहासिकता का प्रश्न है; इसके अधिकांश पात्र और घटनाएँ इतिहासानुमोदित हैं। इतिहास को औपन्यासिकता प्रदान करने के लिए कल्पना की सहायता लेना आवश्यक होता है। पंद्रहवीं–सोलवीं

शताब्दी का यह कथानक ऐतिहासिक दृष्टि से इसलिए महत्वपूर्ण है कि उस काल में भारतवर्ष अनेक राज्यों में विभाजित था। कोई पुष्ट केन्द्रीय शक्ति नहीं थी। दिल्ली का बादशाह सिकंदर लोदी सर्वमान्य नहीं था, इसलिए सारे देश में बिखराव, फूट और वैमनस्य का वातावरण था। हर राज्य अपने को दूसरे से श्रेष्ठ और शक्तिशाली दिखाने की कोशिश करता रहता था। निरंतर एक दूसरे पर आक्रमण करने और लूटपाट करने का प्रयास जारी रहता था। विलासप्रियता चरम सीमा पर थी। ऐसे समय में राजा मानसिंह ने 1446 ई. से 1516 ई. तक ग्वालियर पर शासन किया। उसकी कलाप्रियता उन भवनों में प्रकट है जो उसने बनवाए। इन भवनों में हिन्दू वास्तुकला का प्रयोग हुआ है। मानसिंहकालीन ध्रुवपद और धमार की गायकी आज भी सारे देश में प्रसिद्ध है। मृगनयनी के नाम पर बैजू बावरा ने गूजरी टोड़ी और मंगल गूजरी जैसे रागों की रचना की। गूजरी महल और मान मंदिर जैसे स्थापत्य कला के नमूने आज भी कह रहे हैं कि मानसिंह और गूजरी रानी मृगनयनी अपने युग के परम्परावादी राजा और रानियों से सर्वथा भिन्न थे। मानसिंह जितना योग्य शासक था उतना ही वीर योद्धा भी। इतिहास साक्षी है कि वह सिकंदर लोदी जैसी आक्रमक शक्ति के विरुद्ध निरंतर संघर्ष करता रहा और अपने ध्येय में विचलित होने की बात स्वप्न में भी सामने नहीं आई। कला प्रियता और कर्तव्य परायणता का अद्‌भुत समन्वय स्थापित करने वाले राजा मानसिंह की प्रेरणाशक्ति मृगनयनी जैसी कोई रानी ही रही होगी। मृगनयनी और मानसिंह का यह इतिवृत्त इतिहासप्रसिद्ध होने के कारण जहाँ प्रामाणिक है वहाँ तर्क सम्मत भी है।

वर्माजी ने इन इतिहास सूत्रों को जिनकी ओर इंगित, उपन्यास की भूमिका में किया गया है, कौशल के साथ पिरोया है कि कल्पना और इतिहास का एक रूप हो गया है। वर्माजी ने निरन्तर यह प्रयास किया है कि ऐतिहासिक वातावरण

और पात्रों के मूल रूप से कोई परिवर्तन न आने पाये। अनेक समस्याएँ जिनको सरासरी तौर से देखने पर लगता है कि वे वर्माजी की अपनी मान्यताओं के कारण स्थान पा सकी हैं, शुद्ध ऐतिहासिक हैं। हिन्दू–मुस्लिम सम भाव की दृष्टि मानसिंह में होना, जिसे तुर्क, पठानों से लड़ना पड़ा, आश्चर्यजनक है। सत्य, कल्पना से अधिक विचित्र होता है और ऐतिहासिक सत्य वैचित्र्यपूर्ण ही नहीं, उत्साहपूर्ण भी है। इस संबंध में वर्माजी ने (परिचय) में लिखा है – ''उस बीहड़, भयंकर युग में मानसिंह को तुर्क, पठान आक्रमणकारियों से निरंतर लड़ना पड़ा, परंतु उसके मन में मुसलमानों के प्रति कोई द्वेष नहीं रहा; उसने सिकंदर के भाई जलालुद्दीन के साथ आए हुए अनेक मुसलमानों को ग्वालियर में शरण और रक्षा प्रदान की।''★ *(मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, परिचय, पृ. 9)*

'मृगनयनी' का ऐतिहासिक उद्देश्य भी है। ऐतिहासिक प्रतिबंधों के प्रकाश में ही लेखक की उन अनेक समस्याओं को देखा जा सकता है जो 'मृगनयनी' के सामाजिक उद्देश्य के अन्तर्गत आती है। अपने अन्य उपन्यासों की तरह 'मृगनयनी' के परिचय में भी लेखक ने ऐतिहासिक सामग्री की प्रामाणिकता का उल्लेख कर दिया है। इससे यह स्पष्ट हुआ है कि लेखक ने इतिहास–ग्रंथों तथा लोक परम्परा दोनों की सामग्री का उपयोग विवेक से–समसामयिक आदर्शों को भी दृष्टि में रखकर किया है।

'मृगनयनी' में अनेक स्थलों पर इतिहास–तत्व की प्रधानता हो गई है। यह उसकी राजनैतिक परिस्थितियों के चित्रण में देखी जा सकती है। 15वीं शताब्दी की राजनैतिक गतिविधि का इसमें व्यापक चित्रण हुआ है। यह चित्रण कथा तथा पात्रों से संबंधित राज्यों तक ही सीमित नहीं; चारों ओर के राज्यों तक फैल गया है। इसमें बहमनी सलतनत, विजयनगर, जौनपुर, खानदेश के पुर्तगेजों, सिंध के बलोचों तक की चर्चा हो गई है।

मृगनयनी और मानसिंह तोमर का विवाह ऐतिहासिक सत्य है। ग्वालियर के किले में गूजरी महल और मान मंदिर अवस्थिति से ही इसकी सत्यता प्रमाणित होती है। मानसिंह–मृगनयनी के विवाह और नहर के अवशेष से पुष्ट सांक नदी के पानी को किले तक लाने की शर्त संबंधी जनश्रुति को वर्माजी ने, तनिक परिवर्तित रूप में, उपन्यास में समाविष्ट कर लिया है। मृगनयनी में उल्लिखित महमूद बघर्रा के ग्वालियर पर आक्रमण के निश्चय तथा उसके भोजन का प्रसंग ऐतिहासिक है। इसी प्रकार गयासुद्दीन और नसीरुद्दीन संबंधी प्रसंग और सिकंदर लोदी के आक्रमण की घटनाएँ भी इतिहास में उपलब्ध हैं। सिकंदर लोदी के ग्वालियर पर पाँच आक्रमण इतिहासानुमोदित हैं। नरवर के दावेदार राजसिंह के सिकंदर लोदी की सहायता से पुनः नरवर पर अधिकार, नरवरवालों का ग्यारह मास का प्रतिरोध और सिकंदर द्वारा किले पर अधिकार के बाद वहाँ के मंदिरों और मूर्तियों को तोड़ने की घटनाएँ ऐतिहासिक हैं। विजयजंगम और बोधन के व्यक्तित्व ऐतिहासिक हैं। बोधन की निर्मम हत्या की कथा भी ऐतिहासिक है किन्तु उससे संबंधित अन्य घटनाएँ तथा विजयजंगम संबंधी प्रसंग लेखक की कल्पना की उपज है।

6.2. किंवदंतियों का आश्रय :

वर्माजी ने इस उपन्यास के कथानक में जहाँ ऐतिहासिकता को स्थान दिया है वहाँ किंवदंतियों का भी उपयोग किया है। मृगनयनी का अरना, भैंसों के सींग पकड़कर मरोड़ना, राई गाँव से ग्वालियर तक साँक नदी की नहर बनवाना, मानसिंह की आठ रानियाँ, मृगनयनी का अपने पुत्रों को राज्य न दिलवाकर बड़ी रानी के पुत्र विक्रमादित्य को राज्य दिलवाना तथा लाखी और अटल की कथा के साथ नटों का संबंध जोड़ना आदि ऐसे कथा–प्रसंग हैं जो प्रचलित किंवदंतियों पर आधारित हैं।

6.3. कल्पना का आश्रय :

वर्माजी ने इतिहास के निर्जीव अस्थि–पिंजर में जीवन का संचार करने के लिए अपनी भावमयी कल्पना से भी काम लिया है। उन्होंने 'मृगनयनी' उपन्यास की ऐतिहासिक घटनाओं में तारतम्य, एकरूपता, सरसता और रोचकता का समावेश करने के लिए कल्पना का भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। इस उपन्यास में लाखी और अटल चाहे अपना ऐतिहासिक महत्व रखते हों, परंतु उनकी प्रेम कथा में सप्राणता कल्पना के द्वारा ही रुकी है। लाखी का अंकन वर्माजी ने अपनी कल्पना की भूमिका में सजीवता के रंग भरकर किया है और इसकी इंद्रधनुषी छटा इस उपन्यास की नायिका मृगनयनी से किसी प्रकार से कम नहीं है। कथा से संबंधित प्रसंग भी वर्माजी की कल्पना की उपज है।

पिल्ली, पोटा, नायकिन आदि की जो कथा 'मृगनयनी' में अटल और लाखी के प्रसंग में वर्णित है, वह उपन्यासकार की कल्पना का प्रतिफल है। इसके साथ ही उपन्यास के आरंभ में निन्नी और लाखी का जो स्वच्छंद अल्हड़पन और ग्राम्य जीवन है, वह भी लेखक की कल्पना का प्रसाद है। मृगनयनी के विवाह के बाद सुमनमोहिनी के ईर्ष्या के प्रसंग, मृगनयनी और लाखी को विष देने की घटना आदि वर्माजी की कल्पना के ही भव्य रूप हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 'मृगनयनी' उपन्यास का कथानक इतिहास और कल्पना का समन्वित रूप है।

7. 'मृगनयनी' का आधिकारिक कथानक एवं प्रासंगिक कथाएँ :

7.1. आधिकारिक कथानक :

'मृगनयनी' में मानसिंह और मृगनयनी की कथा आधिकारिक कथानक है। मृगनयनी और मानसिंह का, विवाह–पूर्व जीवन तथा विवाह पश्चात् का जीवन आधिकारिक कहा जायेगा। दोनों के कथानक के द्वारा उपन्यास की रीढ़ का निर्माण होता है। उन दोनों को आश्रय करके उपन्यास का सारा क्रियाकलाप

संचालित होता है। कोई ऐसी कथा नहीं ढूँढ़ी जा सकती जो मानसिंह–मृगनयनी के इतिवृत्त से सर्वथा स्वतंत्र हो। केवल नसीरुद्दीन की कथा बहुत कुछ असंबद्ध–सी लगती है। जिसका कोई संबंध–आधिकारिक कथानक से नहीं दिखलाई पड़ता। लेकिन इसका भी समाधान इस प्रकार किया जा सकता है कि नसीरुद्दीन की चरम विलासिता का चित्रण एक ओर तो गयासुद्दीन के प्रासंगिक कथानक से संबंधित है। दूसरे उस काल के किसी मुसलमान नरेश की विलासिता का चित्रण करके समकालीन पृष्ठभूमि के निर्माण में योग देता है। शेष ऐसा कोई भी प्रासंगिक कथानक नहीं है जो किसी न किसी प्रकार से आधिकारिक कथा का विकास न करता हो।

7.2. प्रासंगिक कथाएँ :

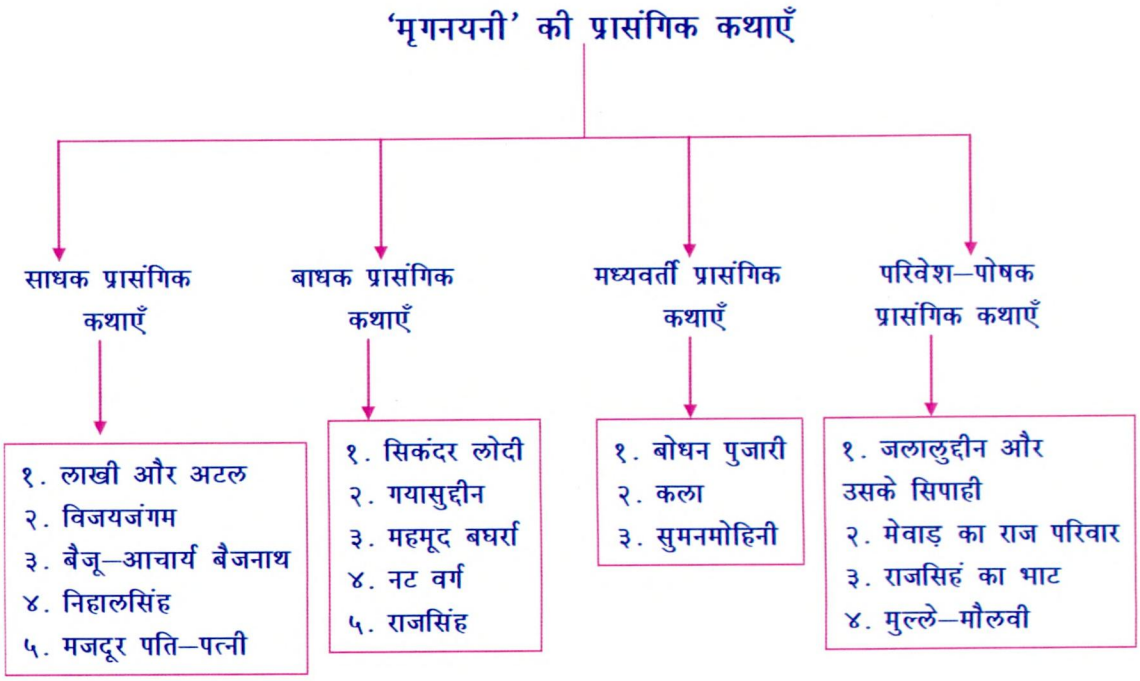

7.2.1. साधक प्रासंगिक कथाएँ :

(i) लाखी और अटल

अटल, मृगनयनी का भाई है और मृगनयनी अटल की प्यारी–प्यारी निन्नी। लाखी मृगनयनी की सखी और बाद में भावज। मृगनयनी के विवाह–पूर्व जीवन

का पोषण अटल की स्नेह छाया में होता है और जंगलों–पहाड़ों में भटकने वाली कुँवारी मृगनयनी के व्यक्तित्व का निर्माण लाखी के साहचर्य में होता है। मृगनयनी के विवाह के पश्चात् लाखी–अटल अपने भाग्य से जूझने के लिए राई गाँव में रह जाते हैं और गाँव के ढोंगियों और रूढ़िवादियों के आतंक से वे दोनों मगरौनी होते हुए नटों के साथ नरवर में पहुँचते हैं। वहाँ गयासुद्दीन का आक्रमण होने वाला है, उसका घेरा पड़ता है। नरवर मानसिंह के राज्य का अंग है। उस घेरे के समय नाना प्रकार के षडयंत्रों से उलझे नट एक ओर तो रस्सियों के सहारे लाखी को भगा ले जाना चाहते हैं और दूसरी ओर उसी रस्सी से सुल्तान की सेना को किले में उतार ले आना चाहते हैं।

लाखी काफी दिनों से मृगनयनी से वियुक्त रहकर भी मानसिंह और मृगनयनी को एक बड़े ही भारी दुर्भाग्य से बचा लेती है। रस्से को काटकर षडयंत्रकारिणी पिल्ली को खाई में मरने के लिए भेज देती हे और सुलतान की सेना को भीतर आने से रोक लेती है। यहाँ पर लाखी, मानसिंह तोमर और मृगनयनी के कथानक को बहुत बड़ा बल प्रदान करती है। घटना चक्र घूमता है। लाखी और अटल ग्वालियर के किले में पहुँचते हैं। वहाँ उन्हें राजसी मर्यादा प्राप्त होती है। अटल का तो प्रायः आधिकारिक कथा से कुछ कटा–कटा स्वरूप प्राप्त होता है। लेकिन लाखी मृगनयनी को पुनः अपना पुराना साहचर्य प्रदान करती है और मृगनयनी के अनेक उदात्त मानवीय गुणों को प्रकाश में आने का अवसर देती है। मृगनयनी रानी होकर भी बदली नहीं, लाखी के लिए वही की वही रह गई। लाखी, मृगनयनी के इस गुण का प्रमाण बन जाती है जो अन्यथा प्रमाणित न हो पाता। समय बीतता है, सिकन्दर का आक्रमण होने को होता है। राई की ओर मानसिंह, मृगनयनी और लाखी–अटल एक दिन जाते हैं। मानसिंह राई की पहाड़ी पर अटल के लिए गढ़ी बनवाकर वहाँ की जगीर उसके नाम लगा देते हैं। अटल–लाखी को दूसरी बार मानसिंह–मृगनयनी से वियुक्त होना पड़ता है। इस

बार अटल और लाखी सिकंदर का आक्रमण होने पर राई की गढ़ी की रक्षा में अपने प्राण निछावर करके आधिकारिक कथा को एक नई शक्ति प्रदान करते हैं और इसमें ही विलीन हो जाते हैं। अटल और लाखी की कथा का कथानक में उपयोग इस बात को भी लेकर है कि वे अन्तरजातीय विवाह की समस्या को अपने जीवन के माध्यम से उपस्थित कर कथानक को एक प्रगतिशील स्वरूप प्रदान करते हैं।

(ii) विजयजंगम :

विजयजंगम पहली बार उपन्यास में एक वैष्णव ब्राह्मण के साथ तर्क–वितर्क करता हुआ दिखलाई पड़ता है। वहाँ उसका विवादी रूप है। राजा के यहाँ दोनों वादी–प्रतिवादी के रूप में उपस्थित होते हैं। राजा दोनों की बात सुनते हैं किन्तु जो कहते हैं वह स्पष्ट तथा किसी के पक्ष की बात नहीं होती। लेकिन बहुत शीघ्र ही यह प्रकट हो जाता है कि राजा के सारे जीवन में प्रकट होने वाले सम्पूर्ण सामाजिक और दार्शनिक विचारों का मूल स्रोत विजयजंगम ही है। राजा का वह मित्र, मन्त्री, गुरु, परामर्शदाता सब कुछ प्रतीत होता है। राजा के व्यक्तित्व के विकास में उदारता, प्रगतिशीलता, कर्तव्य–चेतना भरने में उसका विशिष्ट योगदान दिखलाई पड़ता है। राजा की ओर से उसके मृगनयनी से होने वाले विवाह में वह पुरोहित बनता है। इसमें कोई आपत्तिजनक बात नहीं थी लेकिन वह लाखी और अटल के ग्वालियर में आयोजित होनेवाले विवाह में भी पौरोहित्य स्वीकार करके अपनी जाति–विरोधी भावनाओं का पुष्ट प्रमाण दे देता है। राजा के साथ लक्ष्यभेद का अभ्यास तो करता और कराता ही है साथ ही जिस समय गयासुद्दीन से युद्ध के लिए कूँच करने की तैयारी करने के बाद राजा वीणावादन के लिए कहते हैं, वह तुरंत अस्वीकार करके राजा को उद्‌बुद्ध करता है – ''महाराजा धनुषों की प्रत्यंचा का निरीक्षण करिए, बाणों की नोकें टटोलिए, कहीं थोथरी तो

नहीं पड़ गई। वीणा के वाद्य की ध्वनि और आचार्य बैजनाथ की तानों की झाँई सैनिकों के कान में भी पड़ेगी, फिर वे कल कूच करने की तैयारी न करके किसी न किसी बाजे को लेकर अपने राजा का अनुकरण करेंगे।''★ *(मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, पृ. 175)* राजा मान जाते हैं। राजा को वह दूसरी बार तब फटकारता है जब वे मोती झील पर ठहरे एक योगी वेशधारी सिकंदर के जासूस के हठ पर उससे मिलने जाना चाहते हैं। राजा योगी के आत्यन्तिक हठ पर जाते हैं और युद्ध के कुछ भेद बताकर चले आते हैं। आकर विजय के पूछने पर कहते हैं कि कोई महत्व की बात नहीं हुई। विजय अविलंब शंका करता है कि सेना और किले का सारा भेद उसने ले लिया। मुझको तो वह शत्रु का जासूस मालूम पड़ता है। सेना और सुरंग का भेद ले गया। सेना की गिनती जान लेने का उतना भेद नहीं है परंतु सुरंग का भेद हाथ से निकल गया, यह बहुत बुरा हुआ। इसपर मानसिंह को परिताप हुआ। कर्तव्य–चेतना और कटु से कटु आलोचना के द्वारा राजा मानसिंह तोमर का हित करने के अतिरिक्त वह मृगनयनी को पढ़ाता है। वह स्वयं वीणा का अत्यन्त कुशल वादक है। सच तो यह है कि आधिकारिक कथा को वह अपनी मर्मभेदी दृष्टि से आगे बढ़ाता ही रहता है साथ ही उसे एक वैचारिक भित्ति और एक दार्शनिक निष्कर्ष भी प्रदान करता है।

(iii) बैजू –आचार्य बैजनाथ :

पहले राजसिंह के बैठक की शोभा था किन्तु पीछे ग्वालियर के संगीत समारोह में आकर मानसिंह की गुणग्राहकता से यहीं का हो गया। वह आधिकारिक कथा का उपकार इस अर्थ में करता है कि मानसिंह–मृगनयनी के शासन के कलात्मक उत्कर्ष का सबसे बड़ा साधक बनता है। इसके अतिरिक्त वह मानसिंह के कला और कलाकार के प्रति दृष्टिकोण और आचरण को उभरने

का अवकाश देता है। कला के षडयंत्रों का पर्दाफाश करके वह यों तो भोलापन प्रदर्शित करता है लेकिन वह जिस प्रकार मानसिंह को सचेत करता है यह भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

(iv) निहालसिंह :

निहालसिंह अट्ठाईस–तीस वर्ष का एक युवक था। दोहरी गठीली देह। सहसा प्रवर्ती लक्षण वाली आँख। मानसिंह ने इसको कुछ समय पहले ही अर्जित किया था। कुशल उपयुक्त साथियों को ढूँढ़ निकालने की मानसिंह में प्रतिभा थी। निहाल मानसिंह के समस्त अभियानों में उनके हाथ रहता है। मृगनयनी से जब मानसिंह ने विवाह किया उस यात्रा में निहाल उनके साथ था। एक बार तो वह चम्बल पार करने पर सिकंदर की टुकड़ी को खदेड़ने के लिए विक्रमादित्य के साथ गया। उसने सिकंदर को हराने में सफलता प्राप्त की लेकिन कूट नीति से अबोध होने के कारण वह सिकंदर के दरबार में प्रयोजन सिद्ध करने की अपेक्षा मौत के घाट उतार दिया जाता है। यह व्यक्ति अपने समस्त गुण दोषों के सहित अधिकारिक कथा से ही निकल कर उसको क्षिप्रता प्रदान करता हुआ उसी में विलीन हो जाता है।

(v) मज़दूर पति–पत्नी :

ग्वालियर की अँधेरी गली का एक मज़दूर परिवार। पति थका–भूखा, पत्नी शैय्याग्रस्त तथा बच्चे भूख से छटपटाते हुए रो रहे थे। मानसिंह वेश–परिवर्तन करके अपनी प्रजा की सही दशा जानने के लिए राज्य में घूमा करता था, वह एक पथिक के रूप में मड़ैया में घुसकर मज़दूर दम्पति की सहायता करना चाहता है लेकिन मुड़ासा गिर जाने के कारण वह पहचान लिया जाता है। उसको पहचानकर मज़दूर बोलता है कि "सुना था कि महाराज ब्राह्मणों, पंडितों और सेठों

के ही हैं। आज जाना कि मज़दूरों किसानों के भी हैं।''★ *(मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, पृ. 250)* इस मज़दूर दम्पति की योजना आधिकारिक कथा के यश के प्रसार में – मानसिंह के प्रजापालन की कुशलता के प्रमाण में खड़ी होती है। इसका भी आरम्भ और समापन आधिकारिक कथा के भीतर ही होता है।

7.2.2. बाधक प्रासंगिक कथाएँ :

पाँच बाधक प्रासंगिक कथाएँ हैं जो इस बात में समान हैं कि मानसिंह और मृगनयनी का अहित किसी भी मूल्य पर करना चाहती हैं। लेकिन ये विरोध करके अथवा बाधक बनकर भी वही कार्य संपादित करती हैं जो साधक प्रासंगिक कथाएँ साधक बनकर। वह इस प्रकार की इन विरोधी प्रासंगिक कथाओं के संदर्भ में मानसिंह के शौर्य की चेतना की दीपशिखा के ज्योतित होने का प्रमाण मिलता है। ये प्रायः पाँच हैं।

(i) सिकंदर लोदी और उसका समूह :

सिकंदर लोदी बड़ा ही कठोर शासक था और दिल्ली का अधिपति होने के कारण केन्द्रीय महत्व के स्थान का अधिकारी था। उसने ग्वालियर पर पाँच बार आक्रमण किया और पाँचवीं बार अपनी सारी शक्ति लगाकर वह किसी प्रकार नरवर को ले सका, ग्वालियर को नहीं। इसका कारण मानसिंह का अभूतपूर्व शौर्य और युद्ध–संचालन की क्षमता थी। मानसिंह धीर और शूरवीर था। सिकंदर लोदी उसे ही दबाने के लिए आगरे की स्थापना करके भी ग्वालियर को नहीं ले सका और इसी चिन्ता में मर भी गया। वह अत्यन्त साधन–संपन्न होकर भी मानसिंह को नहीं हरा सका। इसका तात्पर्य हुआ कि आधिकारिक कथा इस विरोधी कथा से अतिशय विरोध पाकर भी उभरती है, ठीक वैसे ही जैसे चित्रकला में कोई विरोधी रंग किसी विरोधी रंग की स्थिति में अच्छा लगता है।

(ii) गयासुद्दीन और उसका समूह :

सुल्तान गयासुद्दीन मालवा का विलासी शासक था। उसे केवल मदिरा, मटरू और नारी में रुचि थी। मृगनयनी और लाखी के बेजोड़ रूप की बात सुनकर वह मतवाला हो उठता है और राज्य की शक्ति उन दो किशोरियों के अपहरण के लिए लगायी जाती है। नटों और उनके माध्यम से भेजे गए टके और रेशमी कपड़े ही नहीं राई के जंगल–पहाड़ों में पहुँचते हैं बल्कि चार बख्तर बंद सिपाही भी उन कन्याओं के अपहरण के लिए भेजे जाते हैं। थोड़ा ही ध्यान देने से पता चल जाता है कि आधिकारिक कथा के एक पक्ष मृगनयनी की शक्ति और पवित्रता को जितना अधिक ये घटनाएँ उभारती हैं उतना कोई और घटना नहीं उभार सकती थीं। कहाँ झिलमटोप वाले हथियारबंद सिपाही और कहाँ अरने भैंसें। पेट के लिए ये लड़कियाँ जानवरों का शिकार करती थीं और सतीत्व तथा पवित्रता के लिए इन सिपाहियों का शिकार करती हैं। यदि एक क्षण के लिए डिग गईं होतीं तो जान खतरे में होती। आगे मृगनयनी–मानसिंह के विवाह के पश्चात् भी गयासुद्दीन लाखी के लिए ही विशेष रूप से प्रयत्नशील रहता है लेकिन वह यह सोचना नहीं भूलता कि यदि ग्वालियर को जीत सकूँगा तो मृगनयनी भी हाथ लग सकती है। तात्पर्य यह कि उसका मानसिंह से जितना भी राजनीतिक विरोध–था उसके मूल में ये कथाएँ भी रहीं। यों गयासुद्दीन सोचता था कि अपनी, राजसिंह तथा चंदेरी की विशाल सेना के बल पर वह मानसिंह को हरा सकेगा? लेकिन एक ही बार के बाद उसका साहस समाप्त हो गया। वह जिस मानसिंह को हराना, बहुत कुछ खिलवाड़ समझ रहा था वह मानसिंह पहाड़ निकला, जिससे टकराकर उसे वापस हो जाना पड़ा। यदि गयासुद्दीन न होता तो न तो मानसिंह की वीरता, युद्ध संचालन–योग्यता का बहुमुखी स्वरूप पुष्ट होता न मृगनयनी के रूप, शौर्य तथा सतीत्व–चेतना का ही इतना स्पष्ट बोध होता। इससे प्रमाणित होता है कि यह प्रासंगिक कथा भी अत्यन्त महत्वपूर्ण रूप से आधिकारिक कथा का विकास और संवर्द्धन करती है।

(iii) महमूद बघर्रा और उसका समूह :

जैसे मृगनयनी का रूप पास–पडोस के सारे राजाओं की इच्छाओं का लक्ष्य था; वैसे ही राजा मानसिंह तोमर का ग्वालियर भी दिल्ली से लेकर गुजरात तक सभी मुसलमानी सल्तनतों का उद्देश्य। गुजरात का शासक अति मानवीय चाल–ढाल वाला विकराल महमूद बघर्रा था। वह कठोरतम शासक था जिसका भोजन ही बिना युद्ध के नहीं पचता था। वह कभी माँडू से लड़ने की सोचता है, चल देता है, कभी पुर्तगालियों से लड़ता है, कभी बलूचियों से लड़ता है, बस यह कि जरूरत–बेजरूरत उसकी तलवार खनखनाती ही रहती थी। वह भी ग्वालियर के लिए माँडू की ओर मुड़ा था। यह भी सत्य है कि राई की उन दो कन्याओं का सौंदर्य इस कठोर और दुर्दान्त शासक के दिल में भी हलचल मचा देता है। इस प्रकार मृगनयनी की आधिकारिक कथा के दोनों पक्षों को मृगनयनी के सौंदर्य से चमत्कृत होकर तथा मानसिंह के शौर्य को ललकार कर बघर्रा और उसका समूह उभार देता है। यों एक बात और भी कही जा सकती है कि बघर्रा के भोजन का इतना विस्तृत वर्णन अतिरंजित–सा लगता है यद्यपि लेखक 'मीराने सिकंदरी' का हवाला देते हैं। साथ ही उसके वर्णन को कुछ और संक्षिप्त किया गया होता तो यह कथा बहुत बड़ी होने के दोष से बच जाती क्योंकि एक प्रकार से मानसिंह और मृगनयनी से इसका बहुत क्षीण संबंध है।

(i) नटवर्ग :

नटवर्ग के क्रिया–कलाप को यों तो गयासुद्दीन के समूह के साथ ही देखना चाहिए क्योंकि ये उसके ही कार्य साधक आरंभ से अन्त तक रहते हैं लेकिन इनका समूह उपन्यास के अनेक पृष्ठ घेरता है इसलिए इसे अलग से लिया गया है। इसे गयासुद्दीन की प्रासंगिक कथा की उपकथा भी कहा जा सकता है। इनके द्वारा आधिकारिक कथा को पर्याप्त बल और महत्व मिलता है। मृगनयनी को प्रलोभनों

के जाल में फँसाने का हर छलपूर्ण उद्योग करते हैं। मगर मृगनयनी उन प्रलोभनों की ओर आँख उठाकर देखती भी नहीं। यह प्रासंगिक कथा, आधिकारिक कथा की प्रबलतम सहायिका कथा लाखी–अटल की प्रासंगिक कथा के महत्व को भी उभारने का पर्याप्त उद्योग करती है। पिल्ली अटल को पाने की चेष्टा करती है और मृगनयनी को यदि वह नहीं भगा सकी तो लाखी को भगा ले चलने का पूरा प्रयत्न करती है। लाखी में गहने–कपड़े, घूमने–देखने का थोड़ा मोह है। जब वह मगरौनी में इन कपड़ों को पहनकर माँडू में हाथियों की कुश्ती के बीच अपने ऊपर सबकी दृष्टि की आह्लादपूर्ण कल्पना करती है तब हमें लगता है लाखी कहीं डिगे नहीं। लेकिन लाखी की यही दुर्बलता ही ऐसी सबलता बन जाती है कि वह नटों के ऊपर चट्टान जैसे टूटती है और उनकी सारी योजनाओं को धूल में मिला देती है। इस प्रासंगिक कथा को इतना योग देना इस उपकथा के लिए बड़े गौरव और कलात्मक मूल्य की बात है।

(v) राजसिंह :

राजसिंह कछवाहा एक जवान सामंत है और चंदेरी में रहता है। कहा जाता है कि नरवर डेढ़ सौ वर्ष पहले उसके पुरखों के हाथ से तोमर शासकों के हाथों में चला गया था। राजसिंह का भाट उसे नरवर के किले के लिए बराबर उसकाया करता था। राजसिंह ग्वालियर नरेश मानसिंह को ही मरवा देने के गंदे उद्देश्य से कला को चंदेरी से भेजता है। यही नहीं नरवर को लेने के लिए वह माँडू के सुल्तान की ओर से तो लड़ता ही है, उसके असफल होने पर सिकंदर लोदी और मानसिंह के युद्ध के समय सिकंदर की ओर से भी लड़ता है। नरवर उसे मिल जाता है, महँगे दामों में। विजय के बाद सिकंदर किले के भीतर जाता है, लुहारों के साथ मंदिरों और कारीगरी की चीज़ों को फोड़वाने के लिए। राजसिंह यह सब अनदेखे भी देखता है। उसे तो नरवर चाहिए। कला जो अब

तक लौट आई थी, आधिकारिक कथा के विकास में साधक और बाधक बनकर अनेक प्रकार से सहायक तो बन ही चुकी थी, साथ ही मानसिंह और राजसिंह के वास्तविक चित्रों का सही अक्स उतारने के लिए उसके हृदय से बड़ा दूसरा दर्पण नहीं मिल सकता। इससे यह भी सिद्ध हो जाता है कि राजसिंह, मानसिंह का विरोध करके उसे एक निश्चित चमक देता है। यह बाधक रूप में ही सही एक प्रासंगिक कथा का आधिकारिक कथा को सहायता देना हुआ।

7.2.3. मध्यवर्ती प्रासंगिक कथाएँ :

(i) बोधन पुजारी

यह पात्र एक रूढ़िवादी, किन्चित रसिक, जिद्दी और शास्त्रार्थी ब्राह्मण है। मृगनयनी और मानसिंह के विवाह का कारण–उपादान बनकर यह अंशतः आधिकारिक कथा का सहायक बनता है लेकिन अटल और लाखी के गाँव छोड़ने में सहायक होकर वह मानसिंह और मृगनयनी के रोष का कारण बनता है। ग्वालियर में आयोजित होने वाले लाखी और अटल के विवाह में भी वह भाग नहीं लेता। ग्वालियर से निकलने पर वह तीर्थ–यात्रा करता हुआ लखनऊ में शास्त्रार्थ करते हुए मरवा दिया जाता है। इस प्रकार उसका लाखी और अटल के विवाह में जितना असहयोग है उससे अधिक मानसिंह के विचारों और आचरणों से असहयोग है। उसका उन्हीं चीज़ों से विरोध है जिनके लिए मानसिंह खड़ा होता है। इस प्रकार वह आधिकारिक कथा को अंशतः साहाय्य प्रदान करता है और अंशतः विरोध। इसलिए इसको मध्यवर्ती प्रासंगिक कथाओं के समूह में रखा गया है।

(ii) कला :

एक चित्रकार की लड़की है। राजसिंह के द्वारा ग्वालियर जासूसी करने और षडयंत्र करने के लिए भेजी जाती है। कला के कारण मानसिंह के चरित्र का

बड़ा ही उदात्त मानवीय पक्ष उभरता है। जब मानसिंह को मालूम हो जाता है कि कला जासूस है तब वह उसे प्रभूत धनराशि इतनी कि उसे जीवन भर किसी से याचना न करनी पड़े; देकर विदा कर देता है, हाँ किले के भीतरी भागों के चित्र नहीं ले जाने देता। कला सुमनमोहिनी के कलुष को उभरने का अवकाश बनती है। मृगनयनी को निस्संतान करने के लिए एक बार वही सफेद चूर्ण ले जाती है। मगर वह चूर्ण को फेंक देती है। इसके अतिरिक्त आधिकारिक कथा के एक पक्ष मृगनयनी को चित्रकला की शिक्षा देकर आधिकारिक कथा के कलात्मक उत्कर्ष का कारण बनती है। इस प्रकार वह अंशतः साधक और अंशतः बाधक बनकर, मध्यवर्ती प्रासंगिक कथाओं के अन्तर्गत आती है।

(iii) सुमनमोहिनी :

सुमनमोहिनी की स्थिति भी ऐसी ही है। वह तो मानसिंह की सबसे बड़ी रानी है लेकिन मानसिंह का सदा विरोध ही उसका लक्ष्य है। चूँकि यह विरोध कोई बड़ा अनिष्ट नहीं कर पाता इसलिए इसे मध्यवर्ती कथा कहा गया है।

7.2.4. परिवेश–पोषक प्रासंगिक कथाएँ :

इसके अन्तर्गत जलालुद्दीन और उसके सिपाही, मेवाड़ का राजपरिवार, राजसिंह का भाट और सिकंदर तथा गयासुद्दीन के मुल्ले–मौलवी आते हैं। जलालुद्दीन और उसके सिपाही सिकंदर के विद्रोही हैं। जलाल तो नहीं उसके सिपाही मानसिंह के यहाँ शरण पाते हैं। यह कथा दो बातों की सूचना देती है। 1. उस युग के मुसलमान नरेशों में भाइयों के बीच राज्यासन के लिए षडयंत्र और विद्रोह। 2. राजपूतों की शरणागत–रक्षा की भावना। मेवाड़ का राजपरिवार भी केवल पृष्ठभूमि का निर्माण करता है, कथा में सीधे कोई हिस्सा नहीं लेता। राजसिंह का भाट सदा राजसिंह कछवाहा को भड़काता है – राजा मानसिंह के

विरोध के लिए लेकिन उसे इसलिए विरोधी नहीं कहा गया है कि वह और उसके वर्ग के लोग उस युग के राजपूत राजाओं के यहाँ अपरिहार्य रूप से रहते थे और उन्हें किसी न किसी के विरुद्ध भड़काया करते थे। यही मूल्य मुल्ले–मौलवियों का था। वृंदावनलाल वर्मा ने एक स्थान पर ठीक ही लिखा है कि उस समय तुर्क पठानों की राजनीति को प्रेरणा मुल्ले–मौलवियों से मिलती थी और अधिकांश राजपूतों को भाटों से। राजपूत इस उक्ति के कायल थे कि,

"गाजतें बचोगे, बचो काल, जमराज हूँते।
नाहिन बचोगे कन्त, कवि की आवाज ते।।"★

(मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, पृ. 311)

8. 'मृगनयनी' के कथानक की विशेषताएँ :

'मृगनयनी' के कथानक की विशेषताएँ अधोलिखित हैं :

❖ कथावस्तु में नियोजित घटनाओं का चयन

'मृगनयनी' के लेखन में वृंदावनलाल वर्मा को चुनाव का श्रम नहीं उठाना पड़ा। वे लिखते हैं कि "1949 के अन्त में ग्वालियर की एक सम्मानित पाठिका ने मुझसे मृगनयनी और मानसिंह तोमर के ऐतिहासिक रोमानी कथानक पर उपन्यास लिखने का अनुरोध किया। उन दिनों 'टूटे काँटे' उपन्यास समाप्ति पर आ रहा था। उसको समाप्त करके कुछ लिखने की वांछा मन में थी ही। मैंने उस कथानक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन अवसर पाते ही आरम्भ कर दिया।"★★ *(मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, परिचय, पृ. 5)* उसने वर्माजी को एक अत्यन्त मार्मिक कथा का संकेत दिया। इस संकेत को पाकर वृंदावनलाल वर्मा ने अपने अध्ययन और भ्रमण के द्वारा सोलहवीं शताब्दी के उस अंधकाराच्छन्न अतीत में से एक जीवंत कथा को ढूँढ़ निकाला जो 'मृगनयनी' के नाम से आज प्रसिद्ध है। 'मृगनयनी' में मृगनयनी की किशोरावस्था से प्रौढ़ावस्था

तक का चित्रण हुआ है जो काफी लम्बा समय है। इसे मृगनयनी का पूरा जीवन भी कह सकते हैं लेकिन थोड़ा–सा ध्यान देने से पता चल जाता है कि लेखक केवल मार्मिक प्रसंगों की योजना करता है। वह मृगनयनी की बाल्यावस्था और वृद्धावस्था का चित्रण नहीं करता। तब कथानक अत्यंत मंथर और शिथिल गति वाला हो जाता है। प्रौढ़ावस्था की एक झलक भर देता है। वह मृगनयनी के उन्हीं जीवन अंशों का चित्रण करता है जिनमें उसके कृषक–जीवन की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं और फिर इसी भूमिका पर वह मृगनयनी के राजसी जीवन का चित्रण करता है। इन दोनों अंशों के चित्रण में भी पर्याप्त चुनाव, मार्मिक घटनाओं की उद्‌भावना और योजना से काम लिया गया है। कहीं भी उपन्यासकार इतिवृत्त के स्थूल अंशों के चक्कर में नहीं पड़ता। उसके सारे प्रसंग और अंश–प्रासंगिक कथाएँ और उपकथाएँ–आधिकारिक कथा को बल और उभार देती हैं।

❖ सुसंगठित

'मृगनयनी' उपन्यास का कथानक सुसंगठित और व्यवस्थित है। इसमें कथानक की चारों अवस्थाओं–प्रारंभ, विकास, चरमसीमा तथा अन्त का पूर्ण परिणाम देखने को मिलता है। इसी का परिणाम है कि कार्य–करण का संबंध घटनाक्रम में सर्वत्र बना रहता है। एक के बाद दूसरी घटना क्षिप्रगति से आती है और कथानक सहज भाव से आगे बढ़ता है। लेखक ने उपन्यास के कथानक के कलात्मकस्वरूप की रक्षा तथा प्रभाव सिद्धि के लिए वर्णनों का अनावश्यक विस्तार नहीं किया है। इस प्रकार 'मृगनयनी' उपन्यास का कथानक सुनियोजित है। उसमें कहीं भी शिथिलता दिखाई नहीं देती है।

❖ स्वाभाविक विकास

'मृगनयनी' उपन्यास के कथानक की एक बड़ी विशेषता यह है कि इसका विकास स्वाभाविक ढ़ंग से हुआ है। उसमें किसी भी प्रकार के बनावटीपन और

अस्वाभाविकता के दर्शन नहीं होते हैं। परिस्थितियाँ स्पष्ट से प्रभाव डालती हैं। द्वन्द्वात्मक परिस्थितियाँ उपन्यास के कथानक के विकास में मात्र सहायक सिद्ध हुई हैं। मृगनयनी के गौरवपूर्ण चरित्र को प्रस्तुत करना उपन्यासकार का मुख्य लक्ष्य है। समस्त कथानक उसके व्यक्तित्व के चारों ओर विकसित होता है। उसके चरित्र को उभारने के लिए जिन परिस्थितियों की उपन्यासकार ने सृजना की है, वे कलापूर्ण और सार्थक हैं। इसमें लेखक को आशातीत सफलता प्राप्त हुई है।

❖ सरलता और स्पष्टता

वर्माजी हिन्दी के समस्त उपन्यासकारों में कथा कहने की कला में सबसे आगे हैं। इसलिए उनके उपन्यासों में कथानक, सरल, सुबोध, सीधे और स्पष्ट होते हैं। 'मृगनयनी' उपन्यास का कथानक उक्त कथा का अपवाद नहीं है। इस उपन्यास के कथानक में किसी प्रकार की जटिलता और दुरूहता दृष्टिगोचर नहीं होती है। पाठक 'मृगनयनी' उपन्यास की कथा को समझने में असमर्थ नहीं रहता है। घटनाएँ द्रुतगति में आगे बढ़ती है और मुख्य कथा की स्पष्टता में सहायक सिद्ध होती हैं। इस प्रकार उपन्यास का कथानक सरल और स्पष्ट बन पड़ा है।

❖ रोचकता

लेखक ने अपने इस उपन्यास में ऐतिहासिक कथानक को रोचक बनाने में सफल प्रयत्न किया है। इसके कथानक का आस्वादन करने में पाठक को किसी प्रकार की अरुचि अनुभव नहीं होती है। इस उपन्यास के कथानक को रुचिकर बनाने के लिए वर्मा जी ने अनेक रोचक प्रसंगों की परिकल्पना की है। जैसे अटल और लाखी की प्रेम कथा, नसीरुद्दीन का काम वासना के लिए पंद्रह हजार सुंदरियों को एकत्र करना और जल विहार, महमूद बघर्रा का प्रसंग, बैजू का

संगीत प्रेम में पागल–सा रहना, पोटा और पिल्ली का नृत्य, भूकम्प की घटना आदि। इस प्रकार इस उपन्यास में छोटी–बड़ी अनेक घटनाएँ हैं, जो कथानक को रोचक बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

❖ कुतूहलता

'मृगनयनी' का कथानक रोचक होने के साथ–साथ कुतूहलतावर्धक है। इसमें अनेक स्थल ऐसे हैं, जहाँ पाठक के हृदय में यह कुतूहल होता है कि 'आगे क्या होगा?' उपन्यासकार ने 'मृगनयनी' के कथानक में पाठकों की उत्सुकता को निरन्तर बनाये रखा है। अटल और लाखी के प्रेम–प्रसंग ने पाठकों की उत्सुकता को बहुत बल प्रदान किया है। उसी का परिणाम है कि पाठकों के मन में जिज्ञासा रहती है कि अटल और लाखी के प्रेम–प्रसंग का क्या होगा? नटों का राई गाँव में पहुँचना भी कम उत्सुकतापूर्ण प्रसंग नहीं है। पाठक बराबर यह जानना चाहते हैं कि देखें लाखी का क्या होगा? जब तक लाखी रस्सी काटकर पिल्ली का प्राणान्त नहीं कर देती, तब तक सहृदय पाठक की जिज्ञासा शान्त नहीं होती है। किसी प्रकार से पाठक के मन में यह कुतूहलता भी रहती है कि आठ रानियों के बीच में मृगनयनी कैसे चैन से रह सकेगी? नसीर और मटरू की गुप्त मंत्रणा के प्रति जिज्ञासा का भाव जागृत होता है। साथ ही, बोधन पुजारी की कट्टरता, सुमनमोहिनी की मृगनयनी के प्रति ईर्ष्या के परिणाम के प्रति भी कुतूहलता बनी रहती है। इस उपन्यास के कथानक का अन्त भी कम कुतूहलवर्धक नहीं है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वर्माजी ने 'मृगनयनी' उपन्यास के कथानक में अनेक कुतूहलपूर्ण घटनाओं की सफल योजना की है।

❖ स्वाभाविकता और सजीवता

इस उपन्यास के कथानक में स्वाभाविकता और सजीवता का गुण विद्यमान है। उसी का परिणाम है कि इसका कथावस्तु में कृत्रिमता और निर्जीवता जैसे

दोष दिखाई नहीं देते हैं। उपन्यासकार ने इस उपन्यास का कथानक भारतीय इतिहास में उन गौरवपूर्ण पृष्ठों से लिया है, जिसमें मृगनयनी की सहायता बिखरी पड़ी है। वर्माजी ने इस उपन्यास में किसी प्रकार की तथ्यहीन बातों का वर्णन नहीं किया है। इस उपन्यास की सभी घटनाएँ अत्यंत सजीव और स्वाभाविक हैं।

❖ मौलिकता

'मृगनयनी' ऐतिहासिक उपन्यास है। इस उपन्यास के कथानक की ऐतिहासिक शुष्कता और नीरसता को दूर करने के लिए वर्माजी ने सरस कल्पना के द्वारा अपनी मौलिकता का भव्य तथा सबल परिचय दिया है। आपने अपनी मौलिक प्रतिभा से अनेक घटनाओं तथा पात्रों की कल्पना की है। लाखी और अटल का प्रेम–प्रसंग, कला की कथा, पिल्ली, पोटा, नायकिन की कथा, लाखी और निन्नी का स्वच्छंद अल्हड़ जीवन आदि अनेक प्रसंग वर्माजी की मौलिकता और नवीनता के प्रतीक हैं।

❖ सरसता और प्रभावोत्पादकता

प्रस्तुत उपन्यास के कथानक में सरसता और प्रभावोत्पादकता जैसे लक्षण भी दृष्टिगोचर होते हैं। पाठक इस उपन्यास को पढ़ते समय नीरसता का अनुभव नहीं करते हैं। इसके साथ ही उपन्यास का कथानक पाठक के मन पर अपूर्व प्रभाव डालता है। यही कारण है कि मृगनयनी के अद्वितीय व्यक्तित्व को विस्मरण नहीं कर पाते हैं।

❖ संयोग का अभाव

वर्माजी के इस उपन्यास के कथानक में संयोग तत्व का अभाव है। इस तत्व का अभिप्राय यह है कि लेखक अपने कथानक में ऐसी घटनाओं और पात्रों

का प्रयोग करता है, जो स्वाभाविक रूप से न आकर संयोगवश आ जाते हैं। वर्माजी ने अपने इस उपन्यास के कथानक में इस प्रवृत्ति को स्थान नहीं दिया है। इस उपन्यास का कथानक नैसर्गिक रूप से अग्रसर होता है। इस प्रकार इस तत्व के आधार पर इस उपन्यास के कथानक को दोषपूर्ण नहीं ठहराया जा सकता।

❖ मार्मिकता

किसी भी उपन्यास में मार्मिक स्थलों की योजना गम्भीरता और रोचकता का संचार करती है। वर्माजी ने इस उपन्यास के कथानक में अपने हृदय की मार्मिकता उडेल दी है। उसी का फल है इसमें ऐसे अनेक मार्मिक स्थल हैं जो पाठकों के हृदय का स्पर्श करते हैं, जैसे लाखी–अटल की वीर–मृत्यु, नरवर बचाने के अवसर पर मानसिंह का लाखी को मान देना, मानसिंह का मृगनयनी से प्रणय निवेदन, ग्राम छोड़ती लाखी का उमड़ती भावनाओं से निन्नी का स्मरण, बोधन का बलिदान, मृगनयनी के उपन्यास के अन्त में त्यागमय भावना आदि।

❖ परिस्थितियों का योगदान

प्रसिद्ध कथाकार प्रेमचन्द की यह विशेषता थी कि वे परिस्थिति विशेष की योजना करके समस्या विशेष को जन्म देते हुए फिर उसका समाधान प्रस्तुत करते थे। वर्माजी ने भी अपने इस उपन्यास के कथानक में यत्र–तत्र इस प्रवृत्ति का परिचय दिया है। जैसे अटल और लाखी नटों के साथ चल देते हैं, इससे कथानक में यह समस्या उठती है कि उनका क्या किया जाए? ऐसी दशा में उपन्यासकार ने मानसिंह को नरवर पहुँचा दिया। इसके साथ लाखी ने नटों की योजना विफल कर दी। इससे इसके ससम्मान ग्वालियर पहुँचने का मार्ग प्रशस्त हो गया। इसी प्रकार से बोधन पुजारी जब ग्वालियर जाता है, तो समस्या यह

है कि उसका क्या होगा? वर्माजी ने सिकन्दर की सभा में मुल्लाओं द्वारा उनकी हत्या कराकर समस्या का समाधान कर दिया है। इस प्रकार वर्माजी के इस उपन्यास के कथानक में स्वाभाविक परिस्थितियों ने अपूर्व योगदान दिया है।

❖ 'मृगनयनी' एक ऐतिहासिक रोमानी कथानक

'हिन्दी उपन्यास' में डॉ. शिवनारायण श्रीवास्तव ने लिखा है कि रोमांस शब्द से ही वहाँ साहस, सदाशयता, वीरता, त्याग, कर्मशीलता तथा कर्तव्य पालन आदि का बोध होता है। इन कहानियों में प्रेम की शक्ति का वर्णन रहता है, अकर्मण्यता का नहीं। जीवन–समर में साबित कदम रखकर प्रेम करते रहना, बड़े से बड़े कष्टों के सामने सिर न झुकाना, हार न मानना यही वास्तविक रोमांस है। 'मृगनयनी' में इन सब बातों का समावेश देखा जा सकता है।

❖ दुर्लभ चरित्रों की योजना

मृगनयनी 'मृगनयनी' उपन्यास की केन्द्रीय पात्र है। उसकी शोभा–सुषमा की समानता में इस धरती में कोई और नहीं है। इसीलिए ख्वाजा मटरू कहता है, 'ऐसा रूप तो कहीं कभी देखा नहीं खुदाबंद नियामत।'★ *(मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, पृ. 53)* उसका चरित्र भी असामान्य है। गाँव की साधारण कृषक कन्या जिसने शिकार और खेत खलिहान के सिवा कभी कुछ न जाना हो इस प्रकार ग्वालियर में पहुँचते ही राजसी वातावरण में ढल जाती है कि समय का कोई व्यवधान नहीं प्रतीत होता। साथ ही मानसिंह जैसा कलाप्रिय, प्रजापालक, शूरवीर, न्यायनिष्ठ शासक भी उस समय सहज संभव नहीं था। लाखी और अटल ने जैसा विवाह किया वह भी विरला ही कहा जाएगा। विजयजंगम जैसा विचारक भी उस युग के लिए विरला ही है। बहुसंख्या तो बोधन जैसे ब्राह्मणों की ही थी। महमूद बघर्रा भी बहुत विचित्र और दुर्लभ जीव है। इस प्रकार 'मृगनयनी' उपन्यास में दुर्लभ चरित्रों की योजना देखा जाता है।

❖ नायक–नायिका से आत्मीयता

'मृगनयनी' उपन्यास के मानसिंह और मृगनयनी में पाठक की उत्तरोत्तर रुचि बढ़ती ही जाती है और कुछ दूर पहुँचने पर पुरुष पाठक अपना तटस्थ रूप भूलकर स्वयं मानसिंह की भूमिका में मानसिक दृष्टि से उतर जाता है। स्त्री पाठिकाएँ मृगनयनी की भूमिका में स्वयं उतरकर उन शालीन मनोभावों का आनंद लेने लगती होंगी। यह तो प्रत्येक पाठक अनुभव करता है कि चाहे जिस प्रकार हो गयासुद्दीन और सिकंदर कोई भी मानसिंह को पराजित न कर सके। यह अक्षुण्ण सहानुभूति ही आत्मीयता का मूलस्रोत है।

❖ कवित्व सृजन

रोमांस परिस्थितियों का काव्य है। मृगनयनी का विवाहपूर्व जो जीवन चाँदनी रातों में खेती की रखवाली करते समय सौंदर्य–दर्शन और वन–पर्वतों में प्राकृतिक शोभा के बीच बीतता है उसमें कवित्व का सृजन नज़र आता है। विवाह पश्चात् नाना कलाओं में पारंगता होती हुई मृगनयनी जिसकी मुसकानों से किरणें क्रीड़ा करती हैं, जो नटराज का ताण्डव नृत्य उपस्थित करती है उसकी कला और सौंदर्य किसी मूर्तिमान कविता से कम नहीं है। मानमंदिर और गूजरी महल के मूल में जो कल्पनाएँ हैं वे सब कविता का सनातन विषय ही हैं और इन विशाल प्रासादों का निर्माण काव्य का प्रेरणास्रोत ही है। कुल मिलाकर मृगनयनी में परिस्थितियों की जो एक सुनियोजित घटना बहुल श्रृंखला प्राप्त होती है उसमें प्रायः ही कविता की स्रोतस्विनी उमड़ पड़ती है। जहाँ परिस्थितियाँ अकलात्मक जान पड़ें वहाँ मानना चाहिए कि वह कवित्व धारा अन्तः स्रोतस्विनी बन गई है। वर्माजी ने यद्यपि कविता नहीं लिखी है और उनके ही अनुसार उनका कविता में कोई दखल नहीं है फिर भी उन्होंने जो प्रकृति वर्णन किए हैं वे अद्वितीय हैं और सनातन कवित्व के श्रृंगार होने लायक हैं।

❖ स्वच्छंद प्रेम

'मृगनयनी' में मृगनयनी–मानसिंह, लाखी–अटल, निहालसिंह–कला, राजसिंह–कला का प्रेम चित्रित हुआ है। मृगनयनी और मानसिंह का प्रेम इस अर्थ में है कि मानसिंह तोमर क्षत्रिय होते हुए गूजर वंशोत्पन्न मृगनयनी से प्रेम करने लगता है उसके प्रबल रूपाकर्षण और अप्रतिम शौर्य के कारण। यहाँ तक का, इस युग्म का संबंध–शुद्ध रोमानी आधार पर प्रतिष्ठित है। उन दोनों का प्राथमिक प्रेमोद्धार जिस वन्यपीठिका पर व्यक्त होता है वहाँ एक ओर नाहर मरा पड़ा है और दूसरी ओर सुविशाल अरना–भैंसा, तीर–कमान, बर्छे–छुरे सब इधर–उधर–इससे अधिक रोमानी पीठिका और कुछ नहीं हो सकती। लाखी–अटल का प्रेम भी स्वच्छंद है। उनका भी प्रेम अन्तर्जातीय स्तर पर तो होता ही है दूसरे उनका भी प्राथमिक प्रेमोद्‌गार राई के जंगल–पहाड़ों में ही प्रकट होता है और ईश्वर को साक्षी देकर जो विवाह होता है वह भी खलिहान के एकांत में आकाश की ओर सिर ऊँचा उठाए वृक्षों के नीचे। राजा का प्रेम–विवाह विवाहोपरान्त रोमानी धरातल से दूर हो जाता है लेकिन अटल, और लाखी गाँव के रूढ़िवादियों के आतंक से नट–बनजारों के साथ–साथ घूमते–फिरते नरवर के किले की रक्षा तो करते ही हैं, जीवन के अन्त में राई की गढ़ी की रक्षा में अपने प्राणों का अर्पण कर देते हैं। उनकी लड़ाई दोहरी है एक ओर तो जातिवाद के ठेकेदारों अर्थात् समाज से और दूसरी ओर तुर्क आक्रांताओं से। स्पष्ट ही कहा जा सकता है कि लाखी और अटल का प्रेम पूर्ण स्वच्छंद है और आदि से अन्त तक उसका यही रूप चलता रहता है। अंतिम श्वास निकलते समय लाखी अटल से यह कहकर कि ''ब्याह कर लेना अपनी जाँत–पाँत में''★ *(मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, पृ. 307)* सामाजिक प्रताड़ना का बड़ा तीखा घूँट उगल देती है और अटल मर कर उसी दुलहिन से ब्याह करके उस रोमानी प्रेम का पूर्ण निर्वाह कर देता है। कला दो पुरुषों के जीवन में आंशिक रूप से आती है, राजसिंह और निहालसिंह।

राजसिंह के साथ उसका घनिष्ठ संबंध–तब कुछ और स्पष्ट हो उठता है जब राजसिंह उसे लेकर नरवर के किले में घूमता है। निहालसिंह के साथ उसकी कुछ प्रेमपूर्ण वार्ता केवल एक बार एक छोटे अवकाश में होती है। कला इन दोनों में से किसी से भी प्रेम करती है यह बता सकना कठिन है क्योंकि उसका व्यक्तित्व पूर्णतः छद्मवेशी है। यों यह संबंध अत्यन्त संक्षिप्त है। इसमें रोमानी स्पर्श अवश्य है लेकिन अत्यन्त अस्फुट।

❖ युद्ध का सहकारित्व

इस पूरे कथानक में कम से कम चार प्रत्यक्ष युद्ध होते हैं और एक बार चार घुडसवारों का दो वीर कन्याओं से युद्ध। प्रश्न है यह युद्ध किस उद्देश्य से लड़े गए? राज्य लिप्सा से अथवा नारी–लिप्सा से या दोनों से! गयासुद्दीन के युद्ध तो शुद्ध रूप से मृगनयनी और लाखी के लिए लड़े गए थे। यों उसमें राज्य लिप्सा का दबा रूप भी प्राप्त हो जाता है। घुड़सवार भी अपहरण के लिए ही गयासुद्दीन के ही भेजे हुए थे। मगर सिकंदर लोदी के युद्धों के विषय में ठीक ऐसा ही नहीं कहा जा सकता। उसके युद्ध राज्य–लिप्सा से संचालित प्रतीत होते हैं। इस प्रकार शौर्य का वातावरण आद्यंत पूरे उपन्यास में बना रहता है। शौर्य को उपन्यास में कर्तव्य–दर्शन के अन्तर्गत समाहित कर लिया गया है।

❖ उच्च गुणों की प्रतिष्ठा

रोमांस में हीन–प्रकृति प्रेम की प्रतिष्ठा नहीं होती बल्कि साहस, शौर्य, सदाशयता, त्याग, मंगलेच्छा से युक्त प्रेम की प्रतिष्ठा होती है। इसके मूर्तिमान प्रतीक लाखी और अटल का युग्म है। वे अंकुठित भाव से एक दूसरे को प्यार करते हैं। अपने एकाकी ऐकांतिक विवाह की घोषणा करने में संकोच का अनुभव नहीं करते। समाज का अत्याचार उन्हें आरंभ में तो डराता है लेकिन वे गाँव

छोडकर ग्वालियर राजा की शरण में न जाकर अपने पौरुष की परीक्षा लेने चल पड़ते हैं। नरवर के किले में रस्से को काटने के बाद लाखी कहती है 'उतरो और निन्दाचार का सामना करो'★ *(मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, पृ. 195)* यह प्रेरणा–स्फूर्त वाणी, यह महान शौर्यपरक कार्य तथा राई की गढ़ी में मृत्यु के आलिंगन के समय वह अपूर्व त्याग इन दोनों के जीवन में प्राप्त होता है। इस प्रकार इस उपन्यास के रोमानी पात्रों में उच्चगुणों की सहज रूप में पर्याप्त प्रतिष्ठा हुई है।

9. 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' के कथानकों का मूल्यांकन एवं विश्लेषण :

'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' और 'मृगनयनी' दोनों ही वृंदावनलाल वर्मा कृत ऐतिहासिक उपन्यास हैं। दोनों उपन्यासों में ऐतिहासिक घटनाओं का बाहुल्य है।

9.1. 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई'

वर्माजी के शुद्ध ऐतिहासिक उपन्यासों में 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' सर्वाधिक प्रसिद्ध है। 'मृगनयनी' के समान इसमें भी ऐतिहासिक घटनाओं का बाहुल्य है। इसी कारण इस उपन्यास के कुछ प्रकरण इतिहास के बोझ से दब गए हैं परन्तु वर्माजी ने चार प्रेमी युग्लों की उद्भावना से इतिहास की शुष्कता को सरसता में बदल दिया है। उपन्यास को पढकर, वीर, श्रृंगार और करुणा के भाव हमारे मन में जागृत होते हैं।

इसमें लक्ष्मीबाई की वीरता और देवी–तुल्य साहस का सुंदर और रोचक वर्णन हुआ है। गंगाधरराव के दोषों के परिहार की भी चेष्टा की गई है। वर्णन–शैली इतनी स्वाभाविक है कि उसकी मार्मिकता कभी–कभी पाठक को रुला देने की भी क्षमता रखती है। गीता और कृष्ण में रानी की आस्था, प्रसिद्ध डाकू

को स्वयं बलपूर्वक कैद करके घोड़े पर क्रांति के संगठन और संचालन में रानी की कार्य–कुशलता, युद्ध में उसकी वीरता और तत्परता, पुस्तकालय को जलते 'देख रानी की आँखों में आँसू भर आना, पेशवा के साथ वीरतापूर्वक 'ह्यू रोज' के विरुद्ध लड़ना और अंत में ''नै...नं...द...ह...ति...पावकः''★ *(झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, वृंदावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन, पृ. 335)* शब्दों के साथ रानी की मृत्यु उपन्यास की कुछ ऐसी मार्मिक घटनाएँ हैं जो सीधे हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाती हैं। उपन्यास में कुछ प्रेम–कथाएँ भी आई हैं जो कल्पना और जनश्रुति पर आधारित हैं। ये प्रेम–कथाएँ मोतीबाई और खुदाबख्श की, जूही और तात्या टोपे की, मुन्दर और रघुनाथ सिंह की, नारायण शास्त्री और छोटी भंगिन की हैं। इनमें प्रथम तीन दुःखान्त हैं। ये सभी प्रेमः कथाएँ तत्कालीन सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालती हुई रानी लक्ष्मीबाई के महान व्यक्तित्व को व्यापक बनाती हैं। ब्राह्मण और भंगिन के प्रेम को लेकर जातीयता का जो विवाद खड़ा हुआ है, वह कम रोचक नहीं। उपन्यास प्रथम श्रेणी की रचना है।

9.2. मृगनयनी :

इस उपन्यास का कथानक ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के युग से संबंधित है। मानसिंह के युग को अँग्रेज़ इतिहासकारों ने 'स्वर्ण युग' कहा है। यह युग पंद्रहवीं शताब्दी के अन्त तथा सोलहवीं शताब्दी के आरंभ का युग था। इस समय दिल्ली के शासक सिकंदर लोदी ने ग्वालियर पर अनेक बार आक्रमण किये परन्तु हर बार उसे मानसिंह से मुँह की खानी पड़ी। इतना अवश्य हुआ कि सिकंदर लोदी के आक्रमण से पर्याप्त विध्वंस हुआ।

इस उपन्यास का कथानक मूलतः ऐतिहासिक है। इस उपन्यास की आधिकारिक कथा मानसिंह और मृगनयनी की है। लाखी और अटल, कामुक गयासुद्दीन और नसीरुद्दीन, नट वर्ग के पोटा, पिल्ली और नायकिन, सिकंदर लोदी,

राजसिंह कछवाहा और गुजरात के सुल्तान महमूद बघर्रा आदि के वृत्त प्रासंगिक कथाओं के अन्तर्गत आते हैं। इस उपन्यास की प्रासंगिक कथाएँ आधिकारिक कथा को बल प्रदान करती हैं। इस उपन्यास की कथावस्तु में इतिहास और कल्पना का मणिकांचन संयोग है। मानसिंह, मृगनयनी, गयासुद्दीन, नसीरुद्दीन, राजसिंह, सिकन्दर, बघर्रा और बोधन पुजारी आदि से संबंधित कथाओं में ऐतिहासिकता के दर्शन होते हैं। लाखी और अटल सम्भवतः इसके ऐतिहासिक पात्र रहे हैं, परन्तु उपन्यास में उनका जो रूप प्रस्तुतीकरण किया गया है वह नितान्त काल्पनिक है। इसके अतिरिक्त उपन्यासकार ने अनेक प्रसंगों में जन–श्रुतियों का आश्रय लिया है। भाव यह है कि इस उपन्यास के कथानक में इतिहास, कल्पना और किंवदंतियों का सुन्दर समन्वय दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार इस उपन्यास का कथानक–संगठन अत्यन्त सबल और परिष्कृत बन पड़ा है। भाव यह है कि 'मृगनयनी' उपन्यास का कथानक सरल, स्पष्ट, स्वाभाविक, सजीव, रोचक, व्यवस्थित, सुसंगठित, सरस, कौतूहल–प्रधान, मौलिक गतिशील और कलात्मक है।